संजय की कलम से ..

रक्षा बंधन – आज के संदर्भ में

चिरातीत से बहनें, भाइयों की कलाई पर श्रावणी पूर्णिमा को राखी बाँधती चली आ रही हैं। भारत का यह त्योहार विश्व भर में अपनी प्रकार का एक अनूठा ही त्योहार है। इस दिन छोटी-छोटी आयु की कन्यायें भी नहा-धोकर अपने भाइयों को राखी बाँधने को तैयार हो जाती हैं। अपने भाइयों के प्रति कितनी शुभ भावना और शुभ कामना समाई होती है हरेक बहन के मन में! अपने भाई का मुख मीठा कराने के लिए कितना प्रेम होता है, उनके हाव-भाव में! इसी प्रकार, कितनी खुशी होती है उस दिन भाई को अपनी बहन से मिलकर! सारे वातावरण में हर्ष और उल्लास भरा होता है। हर चेहरे पर मधुर मुस्कान होती है और हर हृदय में स्नेह के स्पन्दन, और हों भी क्यों न, भाई-बहन का संबंध एक बहुत ही पवित्र स्नेह को लिए होता है। यदि पहले कभी परस्पर कोई मन-मुटाव की बात हो भी गई हो, तो वह आज के दिन भुला दी जाती है और फिर दोनों ओर उसी स्नेह के संबंध की याद आ जाती है।

बहन की रक्षा के लिए सहर्ष स्वीकार किया गया एक अनोखा बंधन

इस त्योहार के पीछे यह मान्यता प्रचलित है कि बहन अपने भाई को राखी बाँधकर उससे यह अपेक्षा करती है कि जब कभी बहन पर दुख की घड़ी आयेगी, तो भाई उससे सहानुभूति और सहयोग का व्यवहार करेगा और जब कभी बहन की आन पर आंच आने लगेगी, तो भाई अपनी जान की बाज़ी लगाकर भी अपनी बहन की आन की रक्षा करेगा। कहते हैं कि इसलिए ही इसका नाम है 'रक्षाबन्धन'। सूत के रंगे हुए धागों में अथवा आज की रेशमी-चमकीली नायलोन की डोर में बहन का भाई के प्रति यह मौन संदेश भरा होता है कि **'भैया, आज तेरी इस कलाई पर इस आशा से यह राखी बाँध रही हूँ कि तेरा यह बाजू अपनी इस बहन की लाज की रक्षा करने में सदा समर्थ हो।'** कैसी है भारत की यह अद्भुत परंपरा कि भाई अपने हृदय में अपनी बहन के प्रति स्नेह-समुद्र को बटोरे हुए सहर्ष स्वीकार करता है इतने बड़े बंधन को और इसी स्वीकृति से संतुष्ट होकर बहन अपना हाथ बढ़ाकर मुख मीठा कराती है अपने भैया का! चार-दस मिनट की इस रस्म में भारतीय संस्कृति की वह झलक सामने आ जाती है कि किस प्रकार यहाँ बहनों और भाइयों में एक मासूम उम्र से लेकर जीवन के अंत तक एक-दूसरे से प्यार का यह संबंध अटूट बना रहता है। यह धागा तो एक दिन टूट जाता है परन्तु मन को मिलाने वाले स्नेह के सूक्ष्म सूत्र नहीं टूटते। यदि वह तार किसी पारिवारिक

(शेष ..पृष्ठ 18 पर)

अमृत-सूची

- स्वतंत्रता और स्वच्छंदता *(सम्पादकीय)*..... 2
- ब्रह्मा बाबा से मैंने क्या सीखा...4
- पुरुषोत्तम संगमयुग और.....5
- सच्चा मददगार..... 7
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 8
- प्रेरणा स्रोत थीं प्यारी दादी माँ..9
- दादी जी के संग बीते..... 11
- सकारात्मक जीवन शैली.....12
- उत्पादन और लाभ बढ़ा.....13
- दो धागे करें कमाल..... 15
- कर्मों का साक्षात्कार *(लघु नाटिका)*..... 16
- ऐसी राखी अबकी बार *(कविता)*..... 18
- दाता की अनुपम देन.....19
- दिव्य गुणों की खान..... 21
- बरबादी से आबादी की ओर. 23
- स्वदर्शन चक्र चलाया करो...26
- श्री कृष्ण जन्मोत्सव..... 27
- परमात्म राखी *(कविता)*..... 27
- सचित्र सेवा समाचार..... 28
- इलाज से परहेज़ भला.....30
- सचित्र सेवा समाचार..... 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	75 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	75/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

सम्पादकीय

स्वतंत्रता और स्वच्छंदता

स्वतंत्र शब्द का अर्थ है स्व (आत्मा) तन्त्र (राज्य) अर्थात् आत्मा का शरीर और कर्मेन्द्रियों पर राज्य। अपने आप पर राज्य करने वाला ही पूर्ण स्वतंत्र है। इसकी भेंट में स्वच्छंद शब्द का अर्थ है स्व (आत्मा) पर इच्छाओं का राज्य। इच्छाओं, तृष्णाओं द्वारा आदेशित व्यक्ति वास्तव में परतंत्र होता है। वह कहता तो यह है कि मैं किसी की क्यों मानूँ, किसी से दबकर क्यों रहूँ, मैं तो अपनी इच्छा का मालिक हूँ परन्तु वास्तव में तो इच्छाएँ उसकी मालिक होती हैं और वह इच्छाओं से दबा रहता है। वह कहता है, मैं तो मर्ज़ी का मालिक हूँ परन्तु वास्तव में मर्ज़ी ही उसकी मालिक बन जाती है और वह दास। इस दासता में वह अपने वरिष्ठजनों की अर्ज़ी या ईश्वर की अर्ज़ी पर भी ध्यान नहीं देता और दासता की गहरी से गहरी ज़ंजीरों में बंध जाता है। ऐसे स्वेच्छाचारी को हम मनचला भी कह सकते हैं, जो मन के कहे अनुसार चलता है और ईश्वर क्या कह रहा है उस पर कोई कान नहीं धरता।

गलत तरीके से सही परिणाम कैसे मिले?

आज भारत देश स्वतंत्र है। हर नागरिक को मौलिक अधिकार प्राप्त हैं परन्तु जीवन का जो मूल स्वरूप है, मूल आत्मिक सुख है उस पर से उसका अधिकार छूट गया है। आत्मा मूल स्वरूप में स्वतंत्र है, वह स्वतंत्र रूप में इस सृष्टि पर कर्म करने आती है और कार्य पूरा कर स्वतंत्र रूप से इस सृष्टि से जा सकती है। परन्तु जैसे ही आत्मा दैहिक आवरण को ओढ़ती है, अपने इस मूल स्वरूप को भूल जाती है और हदों में बंधी देह के साथ अपने को एकाकार करके अपने को भी अनेक हदों में बाँध लेती है। ये हदें उसे दुखी करती हैं। इस दुख से मुक्त होने का सही तरीका तो यह है कि वह देह से न्यारी होने का अहसास करे पर जब इस सही मार्ग का ज्ञान और तरीका नहीं मिलता तो वह कई बार स्वच्छंदता का मार्ग अपनाकर स्वतंत्रता का अनुभव करना चाहती है पर तरीका ही गलत हो तो सही परिणाम कैसे मिले?

तड़प रही है मानवता

स्वतंत्रता का अर्थ है, व्यक्ति विकारों, पापकर्मों, व्यसनों से मुक्त हो। परन्तु कई लोग विकारों, पापों और व्यसनों में बेरोकटोक डूबे रहने की स्वच्छंदता को स्वतंत्रता मानते हैं। इसी स्वच्छंदता का परिणाम है अनेक प्रकार के रोग, शोक, अकालमृत्यु, अशान्ति, बढ़ती महंगाई, भूखमरी, लड़ाई-झगड़ा, हिंसा, मतभेद आदि। आजकल समाज में एड्स का शोर है। यह बीमारी परिणाम है अनियंत्रित, स्वच्छंद काम-भोग की। इस बीमारी के अलावा और भी बहुत से भयंकर परिणाम इस स्वच्छंदता के निकल रहे हैं। नारी सहधर्मिणी के बजाय सह-पापिनी बना दी गई है। जब तक जिए, पुरुष की वासना-तृप्ति के पाप-गर्त में धंसी रहे। गृहस्थ की चारदीवारी फाँदकर यह काम की स्वच्छंदता जहाँ-तहाँ सेंध लगा रही है। काम की कुलालसा और स्वच्छंदता ने चाचा-भतीजी, मामा-भानजी और भाई-बहन के रिश्तों पर भी कालिमा की परत चढ़ा दी है। उम्र का लिहाज़, रिश्ते का लिहाज़ सब स्वच्छंद कामाचार की बाढ़ में बह रहे हैं। एटम और हाइड्रोजन बम से भी भयंकर है यह स्वेच्छाचारी काम की हिंसा। वे तो कभी-कभार ही फटते हैं और कहीं-कहीं ही फटते हैं पर काम-वासना का विस्फोट तो हर समय, हर स्थान पर होता रहता है। उस विस्फोट में तो बिना तड़पे प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं पर काम के विस्फोट में तड़प रही है अधमरी मानवता।

इतने भयंकर परिणामों को देखते हुए सरकार, सामाजिक संस्थाएँ, धार्मिक जन – सभी के द्वारा यह प्रचार होना चाहिए कि काम-भोग पतन का मार्ग है, इससे बचो, संयमी बनो। स्वयं के मन-बुद्धि की लगाम थाम सच्चे अर्थों में स्वतंत्र बनो पर हो रहा है उलटा। एड्स विरोधी नारे, एड्स का प्रचार करते नज़र आ रहे

हैं। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि जब कहा जाता है 'चाय ना पीओ' या 'चाय पीओ' तो दोनों ही स्थितियों में 'चाय' तो बुद्धि रूपी नेत्र के सामने आती ही है। इसके स्थान पर यदि 'दूध पिओ' यह प्रचार किया जाये तो ही चाय का विस्मरण हो सकता है। अत: एड्स को समाप्त करने के लिए भी संयम, नियम, पवित्रता, मर्यादा, इन्द्रिय निग्रह, आत्म-नियंत्रण, स्व-राज्य, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ कृति, दैवी विधान, ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग, मन-बुद्धि का सशक्तिकरण आदि बातों का प्रचार होना चाहिए पर यह प्रचार करना तो पुरातनपंथी बनना लगता है और एड्स को केन्द्र में रखकर, एड्स विरोधी अभियान, मनोवैज्ञानिक रूप से एड्स का प्रचार करता नज़र आ रहा है। स्वच्छंदता कहती है, मर्यादाओं की बात करना, संयम का उपदेश देना मानव के सुख पर आक्रमण है। **पर ठण्डे विवेक से सोचिये, किसी को काम से रंगे नेत्रों से घूरना कितना बड़ा आक्रमण है, अश्लील पोस्टरों पर नज़रें गड़ा-गड़ा कर काम के ज़हर को पीते रहना आत्मा पर भयंकर आक्रमण है, कीमती शारीरिक शक्ति को काम के नाले में बहाकर भरी जवानी में रोग और बुढ़ापे से हाथ मिलाना अपने शरीर पर आक्रमण है, गुप्त रोगों के इलाज के लिए तथाकथित हकीमों के चक्कर लगाना अपने समय, शक्ति और धन पर आक्रमण है, किसी की इज़्ज़त को तार-तार करने की फ़िराक में रहना अपनी सुख-शान्ति पर आक्रमण है। स्वच्छंता का अर्थ ही है विकारों के आक्रमण का प्रतिरोध करने के बजाय उनके आगे समर्पण कर देना अथवा आक्रमण में सहयोग देना।**

परतंत्र है चंचल मन वाला

स्वेच्छाचार और सदाचार – दोनों विरोधी हैं एक-दूसरे के। कई नौजवान कहते हैं, हमें माँ-बाप की अधीनता नहीं चाहिए। विद्यार्थी कहते हैं, शिक्षक का अनुशासन नहीं चाहिए। मीडिया कहता है, मुझे भी नीतिगत अंकुश नहीं चाहिए। राजनैतिक नेता विधानसभाओं और संसद में स्वेच्छाचारी आचरण करके जनता को गलत संदेश देते हैं, गुमराह करते हैं। कई आध्यात्मिक जन भी अध्यात्म के नियमों के अंकुश में नहीं रहना चाहते। सोचते हैं, जब चाहें उठें, जो चाहें बोलें, मनचाहा खाएँ, चाहे जहाँ जाएँ – यह आत्म-कल्याण नहीं, आत्म-पतन है। यह बुद्धिमानी नहीं, मूर्खता है। अखाद्य खाने वाले को स्वतंत्रता कहाँ? वह तो जड़ पदार्थों के अधीन है। जिसका मन चंचल है, वह परतंत्र है। जैसे भूखा जानवर कूड़े के ढेरों को कुरेदता रहता है, ऐसे ही इच्छाओं की भूख मिटाने के लिए वह असंयमी, दुराचारी और स्वेच्छाचारी मनुष्य भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के कूड़े को कुरेदता है, उसमें मुँह मारता है और इन्हीं विकारों की लालसा में भटकता है।

सच्ची स्वतंत्रता देती है आत्मिक सुख

स्वच्छंदता मनुष्य को बाह्य भोगों और सुविधाओं का बंदी बनाती है परन्तु स्वतंत्रता आंतरिक दैवी सुख का रसपान कराती है। स्वच्छंदता मानव तथा प्रकृति का शोषण सिखाती है, स्वतंत्रता दोनों का पोषण सिखाती है। स्वेच्छाचारी आहार, निद्रा, भय और मैथुन इन पशु प्रवृत्तियों के अधीन रहता है और स्वतंत्र व्यक्ति इन सबसे ऊपर उठकर आत्मिक और ईश्वरीय सुख का अनुभव करता है, इसे ही अध्यात्म कहा गया है।

अध्यात्म कहता है, भगवान को सब सौंप दो तो पूर्ण स्वतंत्र होंगे। विकारों, बुराइयों, व्यर्थ से स्वतंत्र होंगे। यही सच्ची स्वतंत्रता है। दिव्य जीवन जीने के लिए जो ज़रूरी है, वह सब करो लेकिन निमित्त बनकर, भगवान को बीच में रखकर, अपने को ट्रस्टी समझकर, ईश्वरीय श्रीमत की लकीर के अन्दर रहकर करो। ईश्वरीय नियम स्वतंत्रता के बाधक नहीं, सहयोगी हैं। मन को मुक्ति की चरम सीमा तक पहुँचाने के लिए हैं। तो आइये, इस स्वतंत्रता दिवस पर ऐसी सच्ची, समग्र, शाश्वत स्वतंत्रता का अनुभव करने का दृढ़ संकल्प लें।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

ब्रह्मा बाबा से मैंने क्या सीखा?

• दादी जानकी

बाबा ने बहुत अच्छी बात सिखाई है कि सेकण्ड में मन-कर्मेन्द्रियों को शान्त करके शान्तिधाम में चले आओ। देह के भान को छोड़, सत्यता और चेतनता के साथ आनन्द स्वरूप बन जाते हैं। जब मैं ज्ञान में नहीं थी तो मन में प्रश्न था, संसार में रहें, गृहस्थी होकर रहें या संन्यासी बनें? बाबा से यह स्पष्ट रूप से सीखने को मिला कि प्रवृत्ति में रहो पर विकारों का संन्यास कर लो। यदि हमारे में विकार भरे पड़े हैं और हम जंगल में चले जायें तो वे भी साथ चले जायेंगे, वे कहाँ रहेंगे? बाबा ने सिखाया कि उन विकारों को कैसे निकालना है? हम शरीर में भी रहें, संबंधियों के बीच भी रहें, ज़िम्मेवारियों को भी निभाएँ पर फिर भी ट्रस्टीशिप (निमित्त भाव को) धारण करें, यह बहुत जानने और सीखने वाली बात है।

इस मुख्य बात के स्पष्टीकरण से मन की उलझन समाप्त हो गई। संन्यासी नहीं बनना पर ऐसा गृहस्थी भी नहीं बनना है, जो गृहस्थी से दुखी हो जाऊँ और भगवान के आगे चिल्लाती रहूँ। संसार में मनुष्य के पास हार-जीत, लाभ-हानि, मान-अपमान आते ही रहते हैं। इनको कहो, नहीं आओ, तो भी आयेंगे। इसमें कर्मों का भी और सूक्ष्म संस्कारों का भी हिसाब-किताब है। तो यह समझ में आ गया, स्थूल में कुछ छोड़ने वाली बात नहीं है, अंदर से विकारों को समाप्त करना है। इसी शरीर में, इसी दुनिया में, इन्हीं संबंधियों के बीच मुझे अपने जीवन को परिवर्तन करके पवित्र बनाना है। **भले ही कलियुग है पर इस युग में ही मैं आम इंसान होते हुए भी कुछ खास बनूँ।**

दूसरी बात, मेरे मन में यह भी प्रश्न था, अनेक धर्म, अनेक शास्त्र, अनेक गुरु, मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ? सत्य क्या है, जब तक इन प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला है तो आध्यात्मिकता में आगे कैसे बढ़ूँ? हठयोग कर नहीं सकती, स्त्री चोला है। जंगल में जा नहीं सकती, करूँ क्या? भक्तिमार्ग की भी अनेक बातें हैं पर अर्थ जाने बिगर कैसे करूँ? करो तो प्राप्ति नहीं, न करो तो संशय आता है। तभी शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा बड़ा स्पष्ट करके सुनाया, ये जो अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड हैं इनसे भगवान की प्राप्ति नहीं होती, भगवान को पाने के लिए निरंतर उनका ध्यान लगाना (योग) सिखाया। उससे मन की भटकन छूट गई। शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा आत्मा, परमात्मा तथा कर्मसिद्धांत का बड़ा स्पष्ट ज्ञान दिया है। ये तीनों बातें स्पष्ट

होने से समझ आ गई कि मैं कौन हूँ, मुझे संबंध किससे जोड़ना है और करना क्या है?

कइयों का प्रश्न उठता है, ब्रह्मा बाबा को तुम क्या समझती हो, गुरु या गॉड? ना गुरु ना गॉड समझती हूँ। भगवान एक है, यह ब्रह्मा बाबा ने स्पष्ट करके समझाया। सतगुरु भी वही एक है इसलिए बुद्धियोग किसी देहधारी की तरफ नहीं जाता है। हर समय ब्रह्मा बाबा ने ध्यान खिंचवाया, जिसके द्वारा ज्ञान सुन रहे हो, इसको याद नहीं करना वरन् याद उसको करना, नहीं तो टीचर या गुरु को ही हम याद करते रहते हैं पर याद उसको (निराकार परमात्मा शिव को) करना है, यह ध्यान बाबा ने बार-बार खिंचवाया है। ब्रह्मा बाबा द्वारा हम श्रेष्ठ कर्म करना और योग लगाना सीखे हैं। ब्रह्मा बाबा थे तो हमारी तरह साधारण तन परन्तु उनकी बुद्धि कितनी श्रेष्ठ थी और निश्चय कितना गहरा था! ❖

पुरुषोत्तम संगमयुग और कलियुगी भ्रष्टाचार

अर्थात् विनाश के प्रति तीव्र गति की दौड़

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

परमपिता परमात्मा शिवबाबा ने हमको सतयुग और कलियुग के बीच में जो अन्तर है, वह अच्छी रीति समझाया है। सतयुग को श्रेष्ठाचारी आत्माओं की दुनिया कहते हैं और कलियुग को भ्रष्टाचारी आत्माओं की दुनिया कहा जाता है। पुरुषोत्तम संगमयुग है भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बनने का युग अर्थात् परिवर्तन का युग। सतयुगी दुनिया के लक्षण और व्यवहार को शिवबाबा ने साकार और अव्यक्त मुरलियों में विस्तार से बताया है और कलियुग के विषय में जो भी बताया है, उसे हम प्रत्यक्ष रूप में देख रहे हैं, अनुभव भी कर रहे हैं तथा ज्ञान-योग की प्रदर्शनियों और आर्ट गैलरी में मॉडल्स *(Models)* द्वारा भी दर्शकों को बताते हैं। दोनों के विरोधाभास को हम बच्चे ही अच्छी रीति जानते हैं। कई बार प्रदर्शनी के दर्शक पूछते हैं कि कलियुग के भ्रष्टाचार को तो हम सब जानते हैं, उसको प्रदर्शनी में दिखाने की क्या आवश्यकता है?

आज हम कलियुगी भ्रष्टाचारी दुनिया का विहंगावलोकन करेंगे। जिस गति से भ्रष्टाचार अति की ओर दौड़ रहा है, उससे लगता है कि विश्व परिवर्तन का कार्य बहुत शीघ्र संपन्न होने वाला है। गुरुवार, 18 जून 2009 को अव्यक्त बापदादा ने जो संदेश आदरणीया मोहिनी बहन के द्वारा भेजा, उसमें यही बात बताई कि आगे, विनाश के समय इतनी ईश्वरीय सेवा बढ़ेगी कि आप बच्चों को खाना बनाने तथा खाने का भी समय नहीं मिलेगा अर्थात् दिन-रात, 24 घंटे सेवा में लगाने होंगे अत: ऐसी सेवा के लिए अपने को तैयार करना चाहिए।

दुनिया के सभी देशों में भ्रष्टाचार है। अमेरिका जैसे संपन्न देश के राष्ट्रपति रिचार्ड निक्सन को भ्रष्टाचार के आरोपों में ही पद-त्याग करना पड़ा। अमेरिका का ही उपराष्ट्रपति, रिश्वत के पैसे बैंक खाते में जमा करते पकड़ा गया और उसको त्यागपत्र देना पड़ा। अमेरिका के एक अन्य राष्ट्रपति बिल क्लिंटन को काम विकार के भ्रष्टाचार के विषय में अनेक बातें सहन करनी पड़ी और नाम बदनाम हुआ। इंग्लैण्ड के प्रिंस चार्ल्स के काम विकार के भ्रष्टाचारी कर्त्तव्यों के कारण ही उनकी पत्नी डायना को तलाक *(divorce)* लेना पड़ा। आज इंग्लैण्ड में कई लोग मानते हैं कि वर्तमान महारानी एलिजाबेथ के बाद उनका बेटा प्रिंस चार्ल्स राजा न बने और उनके स्थान पर प्रिंस चार्ल्स के बेटे को राजसिंहासन मिले।

वर्तमान में इंग्लैण्ड के लगभग 350 सांसदों के विषय में पूरी जाँच-पड़ताल हो रही है कि क्या इन्होंने यात्रा आदि के अनेक प्रकार के झूठे बिल-वाउचर बनाकर पैसे खाये हैं। संसद के सभापति पर पैसे के भ्रष्टाचार का आरोप सिद्ध हो गया है जिस कारण उसे त्यागपत्र देना पड़ा है। ऐसे ही कार्यों के कारण वहाँ के वित्त मंत्री *(Finance Minister)* पर भी आरोप हैं, उनको भी त्यागपत्र देना पड़ा है। इंग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट, जो दुनिया के सभी देशों की पार्लियामेन्ट की जन्मदात्री है, के करीब आधे सांसदों के भ्रष्टाचार की खुले आम चर्चा हो रही है।

मैक्सिको के एक पूर्व राष्ट्रपति, राष्ट्रपति चुने जाने से पहले साधारण व्यक्ति थे। आठ साल के बाद भ्रष्टाचार के कारण उनसे ज़बरदस्ती राष्ट्रपति पद छुड़ाया गया और वे स्विट्जरलैण्ड में रहने लगे तब उनके विषय में समाचार निकला कि दुनिया के सबसे धनी व्यक्तियों में उनका छठा स्थान है अर्थात् आठ साल के कार्यकाल में उन्होंने भ्रष्टाचार से इतनी धन-संपत्ति इकट्ठी कर ली जो

दुनिया के सबसे अधिक धनी व्यक्तियों की लिस्ट में उनका छठा नंबर हो गया।

इसी प्रकार, अफ्रीका के अनेक देशों के राष्ट्र-प्रमुखों, प्रधानमंत्रियों आदि का नाम भ्रष्टाचार से बने धनवानों में गिना जाता है। इन सभी राजनेताओं में पहला नम्बर है ग्याना देश के राष्ट्रपति थियोडोर का। उसके पास 65 बिलियन अमेरिकन डॉलर अर्थात् 65 अरब अमेरिकन डॉलर हैं जो उन्होंने राष्ट्रपति के पद पर रहकर भ्रष्टाचार से इकट्ठे किये हैं। लीबिया के राष्ट्रीय नेता अलगद्दाफी का नंबर दूसरा है। उनके पास 56 बिलियन अमेरिकन डॉलर की भ्रष्टाचार से इकट्ठी की हुई संपत्ति है। केन्या के पूर्व राष्ट्रपति अरायमोई का नंबर अफ्रीका के धनवानों की लिस्ट में 16वां है। यूगाण्डा के राष्ट्रपति योवेरी मूजेवेनी का बारहवां नंबर है। नाइजीरिया के पूर्व राष्ट्रपति ओल्यूजेगून, जो अभी-अभी राष्ट्रपति के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, का नंबर दसवां है और जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति राबर्ट मुगाम्बे का आठवां नंबर है। ऐसे ही भ्रष्टाचार के क्षेत्र में कई लोग धोखाधड़ी *(Smuggling)* के द्वारा भी धन कमाते हैं। जून की 16 तारीख को इटली के एयरपोर्ट पर दो जापान के पासपोर्टधारी व्यक्तियों के सूटकेस में, जो शायद चाइना के झूठे पासपोर्ट पर हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे, अमेरिकन सरकार के 134 बिलियन डॉलर के बॉण्ड पकड़े गये। आज दिन तक के धोखाधड़ी के इतिहास में यह सबसे बड़ा केस है क्योंकि 134 बिलियन डॉलर अर्थात् भारत के 64 लाख करोड़ रुपये होते हैं या कहें कि भारत की कुल आय का आठवां भाग है या कहें कि अमेरिका के कंप्यूटर के क्षेत्र में कमाई करने वाले बिल गेट्स की कुल संपत्ति से 3.5 गुणा अधिक है। इन दो व्यक्तियों के धोखाधड़ी के कारोबार से पता पड़ता है कि दुनिया में धोखाधड़ी से कितना भ्रष्टाचार हो रहा है और दिन-प्रतिदिन यह बढ़ता ही जा रहा है।

भ्रष्टाचार सिर्फ धन का नहीं होता है किंतु पारिवारिक जीवन में भी भ्रष्टाचार होता है। भारत की राजधानी दिल्ली में बुजुर्गों के विरुद्ध जो अपराध होते हैं, वे मुंबई से चार गुणा अधिक और बैंगलोर से दो गुणा अधिक होते हैं। उनमें 13 प्रतिशत डकैती के, 35 प्रतिशत हत्याओं के, 52 प्रतिशत उनके बच्चों द्वारा धन-संपत्ति के लिए उनके विरुद्ध केस होते हैं, 40 प्रतिशत केस उनकी पत्नी, बच्चे और बच्चियों आदि के द्वारा होते हैं, ऐसी एक रिपोर्ट हेल्पएज इण्डिया द्वारा छपी है। उस रिपोर्ट में लिखा है कि दिल्ली में 13 प्रतिशत बुजुर्गों को उनके घरों में बन्दियों की तरह, उनके बच्चों द्वारा रखा जाता है।

भ्रष्टाचार भारत सरकार भी करती है और कराती भी है उदाहरणार्थ अभी वैश्विक स्तर पर जो आर्थिक मंदी चल रही है, उसका भारत पर भी प्रभाव पड़ा है, जिसके कारण बैंकों द्वारा जो ऋण दिया जाता है, उसके ब्याज में कटौती भारत सरकार करा रही है अर्थात् एक से डेढ़ प्रतिशत ब्याज कम करा रही है, ऐसा समाचार पत्रों में रोज़ आता है। वास्तविकता यह है कि बैंक फिक्स डिपॉजिट पर जो ब्याज देते हैं, वह पहले 11 प्रतिशत था, अब 7 प्रतिशत है। इसका अर्थ है कि देने का ब्याज 4 प्रतिशत कम हुआ और लेने का ब्याज एक-डेढ़ प्रतिशत कम हुआ, फिर भी सरकार कहती है कि हम जनहित के लिए कारोबार कर रहे हैं। इस संबंध में भारत के सभी राष्ट्रीय बैंकों ने जो एडवांस टैक्स भरा है, उसकी 15 जून 2009 की रिपोर्ट अनुसार स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की अनुमानित आय 10,680 करोड़ होगी क्योंकि उसने 1,068 करोड़ का एडवांस टैक्स भरा है और वह बैंक, 15.6.2009 की रिपोर्ट के अनुसार, सबसे अधिक एडवांस टैक्स भरने वाली कंपनी है। पिछले वर्ष इसी बैंक ने एडवांस टैक्स 680 करोड़ रुपये भरा था अर्थात् उसके आधार पर 31.3.2009 के वर्ष की इस बैंक की आमदनी करीब 7,000 करोड़ रुपये होनी चाहिए अर्थात् एक साल में 3,500 करोड़

रुपये से अधिक से उनका मुनाफा ज़्यादा होगा। कारण कि ब्याज लेने में भले 1.5% कम किया परंतु ब्याज देने में 4% कम हुआ और फिर भी सरकार कहती है, हम उद्योगों को तथा व्यक्तियों को आर्थिक मंदी के समय में मदद कर रहे हैं।

ऐसे ही पेट्रोलियम के क्षेत्र में भी भारत सरकार सत्यता को छिपाकर कारोबार करती है। सरकार कहती है कि पेट्रोल-डीजल के क्षेत्र में सरकारी कंपनियों को नुकसान हो रहा है। ओ.एन.जी.सी. ने 15 जून, 2009 को, 31.3.2010 के लिए अपना लाभ अंदाज से 8,900 करोड़ दिखाया है और उस पर 890.5 करोड़ का एडवांस टैक्स भरा है। अब आप ही सोचिये कि पेट्रोल-डीजल के धंधे में सरकार को नुकसान होता है या कमाई हो रही है।

इस प्रकार भ्रष्टाचार के वृत्तांत लिखने लगें तो ज्ञानामृत का पूरा अंक ही भ्रष्टाचार-अंक के रूप में हो जाये और ज्ञानामृत प्रेस के आत्म प्रकाश भाई को अलग से छपाना पड़े। ये तो अंश रूप में देश-विदेश के भ्रष्टाचार के अंक-आंकड़े लिखे हैं और आगे आप पर सोचने के लिए छोड़ दिया है। अब हम विचार करें कि आज की दुनिया का बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार यह सिद्ध कर रहा है कि अब विनाश रूपी अंत का समय दूर नहीं है परंतु हम अंत की तरफ पूरी शक्ति के साथ दौड़ रहे हैं या नहीं अर्थात् हम जो भ्रष्टाचारी दुनिया को श्रेष्ठाचारी बनाने में परमात्मा के साथ हैं, हम उसकी पूरी तैयारी कर रहे हैं? भ्रष्टाचारी दुनिया को श्रेष्ठाचारी दुनिया में परिवर्तन करने का कार्य कितना कठिन है, जिसको पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा ही कर सकते हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों में परमपिता परमात्मा ब्रह्माकुमारी बहनों और भाइयों को देश-विदेश में भेज कर नैतिक मूल्यों का प्रचार और प्रसार कर रहे हैं। जो भाई-बहनें यह कार्य कर रहे हैं, यह उनकी कितनी हिम्मत और साहस का परिचायक है। इस हिम्मत और साहस का आधार है परमपिता परमात्मा शिव पर अटल निश्चय और अटूट विश्वास। अंत में मैं यही कहूँगा कि भ्रष्टाचार पर श्रेष्ठाचार की बहुत जल्दी जय हो, जय हो, जय हो।

❖

सच्चा मददगार

ब्रह्माकुमारी ज्योति, इन्दौर (रानीबाग)

बात सन् 2002 की है। उज्जैन सेवाकेन्द्र पर हम दो बहनें सेवारत थीं। एक रात करीब दस बजे मुझे बहन ने बोरिंग चालू करने को कहा क्योंकि पानी की टंकी पूरी खाली हो चुकी थी। मैंने बोरिंग चालू कर दिया। टंकी काफी बड़ी थी, उसे भरने में समय लग गया और थोड़ी देर बाद हम दोनों बहनें भूल गईं कि बोरिंग चालू है। रात 10.30 बजे बाबा को गुडनाइट करके हम सो गईं और बोरिंग चलता रहा। रात करीब 1.30 बजे मेरे सपने में ब्रह्मा बाबा आये और बोले, बच्ची, ज़रा उठो, बाहर जाकर देखो, पानी बह रहा है। मैं हड़बड़ाकर तुरंत उठी और बहन से पूछा, आपने रात को बोरिंग बंद किया था क्या? उसने कहा, नहीं। फिर तो हम दोनों ने तुरंत बाहर जाकर देखा, सेंटर के चारों ओर पानी ही पानी बह रहा था। बोरिंग के बटन को बंद करने लगे तो वो भी बंद नहीं हो पा रहा था। मैंने तुरंत आँखें बंद करके बाबा से पूछा, बाबा, अब क्या करें? तुरंत टचिंग आई कि बच्ची, मेन स्विच को बंद करो। मैंने मेन स्विच को गिराया तब जाकर वह बोरिंग बंद हुआ।

इस घटना को जब भी मैं स्मृतिपटल पर लाती हूँ तो बाबा के प्यार में दिल भर आता है कि कैसे बाबा हम बच्चों की सदा रक्षा करता है। अगर उस दिन बाबा स्वप्न में नहीं आता तो पता नहीं कितना नुकसान हो जाता। ऐसे सच्चे साथी पर क्यों ना जाएँ कुर्बान! ❖

'पत्र' संपादक के नाम

प्रश्न : भीख देनी चाहिए या नहीं?

– सुरेश कुमार सिन्धड़,
जयसिंहपुरा, असन्ध (करनाल)

उत्तर : सहयोग देना और भीख देना – दोनों में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। यदि हम किसी अशक्त व्यक्ति को आर्थिक या मानसिक सहयोग इसलिए दे रहे हैं कि वह पाँव पर खड़ा हो जाये, थोड़ा आगे बढ़ जाये तो यह प्रशंसनीय कर्म है परन्तु यदि हम किसी को भीख दे रहे हैं और वह भिखारी का भिखारी ही बना हुआ है तो ऐसी भीख से क्या लाभ हुआ? वह तो पराश्रित, पर-आधारित हो गया। हमने उसकी सोई कर्मठता को जगाया नहीं बल्कि भीख की बूँदें डालकर उसे अधिक अकर्मण्य बना दिया।

मान लीजिए, एक बच्चा बैठे-बैठे आदेश चलाता है, पानी लाओ, भोजन लाओ, तो माता-पिता उसे डाँट देते हैं कि क्या तुम उठ नहीं सकते, हाथ-पाँव नहीं हिला सकते? भले ही बच्चा लाड़ला हो, इकलौता हो, फिर भी माता-पिता उसे अपने आश्रित नहीं देखना चाहते। उन्हें अपने बच्चे से सच्चा प्यार होता है इसलिए उसके बहुत आगे तक के जीवन को सुखी देखना चाहते हैं और उसे हर प्रकार से आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं।

एक भिखारी के प्रति हमारी यह दूरगामी कल्याण भावना नहीं होती। यदि हो तो हम उसे भी कर्मठ बनने के तरीके सुझाएँ। छोटी आयु के हट्टे-कट्टे नर-नारियों को भिक्षा देना तो जान-बूझकर भिखारियों की जनसंख्या में इजाफा करने वाली बात है। ऐसे लोग अपने बच्चों को भी जन्म से भीख माँगना सिखा देते हैं। कलियुग के इस तमोप्रधान समय में भीख के बढ़ते व्यवसाय में बच्चों को चुराने, उन्हें अपंग बनाकर लोगों की सहानुभूति आकर्षित करने का साधन बनाए जाने की घटनायें भी सामने आती हैं।

लौकिक पढ़ाई में पहले 'क' आता है, फिर 'ख' आता है अर्थात् पहले कमाओ, फिर खाओ पर भीख के धंधे ने तो पहले अक्षर को मिटा ही दिया है और केवल खाना रह गया है। इस खाने में केवल पेट भरना हो तो अलग बात है परन्तु कई बार तो पेट के अलावा तृष्णाओं और व्यसनों की आग में भीख झोंक दी जाती है जिससे देने वाला भी पाप और अपराध की गिरफ्त में आ जाता है। आजकल तो भीख के पैसे से समाज विरोधी कार्य तथा अपराध भी होते देखे जाते हैं।

दया धर्म का मूल है। दया सब पर करनी चाहिए पर ऐसी दया किस काम की जो देश और समाज के पतन का कारण बने। किसी भूखे को भोजन खिलाना, वस्त्र आदि दान करना निश्चित रूप से पुण्य का कार्य है पर लेने वाला सुपात्र भी तो होना चाहिए। कइयों को भीख देने के बजाय यदि हम एक व्यक्ति को भी भीख माँगने से छुड़ाकर, कर्मठ बना सकें तो यह कई गुणा पुण्य कर्म होगा। कई लोग अनाथाश्रम आदि में सहयोग देते हैं, यह समाज सेवा है। कई बार बीमार, बूढ़े, अपंग लोगों से सहानुभूति होती है, सहानुभूति होनी चाहिए, यह अच्छा गुण है पर देखना यह भी है कि कहीं हमारी सहानुभूति का ग़लत फायदा तो नहीं उठाया जा रहा। कर्म सिद्धांत तो यही कहता है, भीख लेना और देना – दोनों ही कर्म त्याज्य हैं।

अध्यात्म तो मानव से क्या, भगवान से भी माँगने से मना करता है। अध्यात्म कहता है, माँगना अच्छा संस्कार नहीं है। भगवान से भी माँगो मत। भगवान के ज्ञान, गुण और शक्तियों के खज़ाने के अधिकारी बनो। भगवान भी कहते हैं, मैं मंगतों का पिता नहीं बनना चाहता, मैं चाहता हूँ, मैं दाताओं का पिता बनूँ, मेरा हरेक बच्चा दाता बने। अत: भीख देकर किसी को मंगता बनाने के बजाय, ईश्वरीय ज्ञान देकर उसे भी दाता बना देना सबसे श्रेष्ठ कर्म है।

कोई आपका विरोध करता है तो भी रहम की भावना नहीं छोड़ो। विरोध, अपमान, गालियाँ खाद का काम करते हैं और फल अच्छा निकलता है। जितनी गाली देते हैं उतने गुण भी गायेंगे।

प्रेरणा स्रोत थीं प्यारी दादी माँ

• ब्रह्माकुमारी कमलेश, कटक

सन् 1966 में मैंने प्यारी दादी की एक झलक देखी, उस झलक से ही मेरा दादी के प्रति झुकाव और आकर्षण बढ़ने लगा। मुझे अनुभव होने लगा मानो दादी ने मेरे मन को मोह लिया। मुझे लगने लगा कि ये सचमुच दिव्य मूर्ति हैं, देवी स्वरूपा हैं। सन् 1969 में मैं दादी जी के बहुत नज़दीक आ गई जब दादी जी मधुबन में ही रहने लगी थी। प्यारी दादी की ममता, सरलता, नम्रता, गंभीरता, बुद्धि की विशालता का मैंने बहुत गहराई से अनुभव किया। दादी जी प्यार की मूर्ति थी। एक बार हमने कहा, प्यारी दादी, जैसे हमने बाबा की गोद ली है वैसे हम आपकी गोद में जाना चाहते हैं। फौरन दादी जी ने मीठी मुस्कान के साथ कहा, आओ, आओ और गोदी में ले लिया तथा पीठ थपथपायी। हमारी सारी थकान दूर हो गई। हमें अनुभव हुआ जैसे हम बापदादा की गोद में हैं।

दिव्यगुणों की खान

दादी जी दिव्यगुणों की खान थी। एक बार मैं एक सेवाकेन्द्र से आई, वहाँ थोड़ा कुछ सहन नहीं हुआ था तो **दादी ने बड़े प्रेम से कहा, मैं यहाँ साठ सेठों का सहन करती हूँ, क्या तुम दो-चार स्टूडेन्ट का सहन नहीं कर सकती हो? सहनशक्ति से ही हमारे अंदर और भी दिव्यगुण आ जायेंगे।** ऐसी मीठी शिक्षा देकर दादी जी उमंग-उल्लास से भर देती थी।

सहनशीलता और सरलता दादी जी में कूट-कूट कर भरी थी। प्यारी दादी को रोना बिलकुल पसंद नहीं था। एक बार मैं बात करते-करते थोड़ा रो पड़ी तो तुरंत दादी ने एक बहन को कहा, इसे बाहर ले जाओ, जब रोना बंद करे तब मेरे पास आये, तब दादी मिलेगी। मुझे तुरंत हिम्मत दी और दस मिनट के बाद जब मैं दादी के पास एकदम हँसके आई तो दादी ने मुझे बहुत प्यार किया, गले लगाया और खुशी दी, कहा, रोता कौन है? जिसका पति नहीं। तुम्हारा पति तो सर्वशक्तिमान है और मुझे दादी जी से शक्ति प्राप्त होने जैसा अनुभव हुआ। फिर मुझे पंजाब सेवा में जाने के लिए राज़ी किया।

मन की बात जानने वाली

जब भी हमने कोई मन की बात प्रकट की, दादी उसे शीघ्र ही पूरा करती। बिना बताये ही दादी को मालूम पड़ जाता था कि हम क्या चाहते हैं। एक बार मेरे मन में आया कि दादी की सेवा करूँ तो दादी मेरे मन की बात जानकर अपनी सेवाधारी बहन को बोली कि आज कमलेश को यह सेवा दे दो। यह सुनकर मेरी खुशी

का ठिकाना नहीं रहा। मन में सोचा कि दादी तो पूरी साकार बाबा हैं। बिना कहे मन की बात समझ लेना और हर खुशी दे देना दादी की विशेषता थी। दादी को देख हमारे अंदर अनेक गुण आने लगे। अनेक कमज़ोरियाँ दादी अपने स्नेह और शक्ति की दृष्टि से मिटा देतीं। दादी को देख कर हमेशा त्याग, तपस्या, वैराग्य वृत्ति जागृत होती। दादी सदा तपस्या और सेवा की तरफ ध्यान खिंचवाती थी।

पत्रों द्वारा प्रेरणा

दादी का जीवन ही शिक्षणीय था। सन् 1973 में मैं सेवार्थ कटक आई। दादी के अनेक पत्र हमारे पास आते। अनेक प्रेरणादायक, उमंग-उल्लास भरी शिक्षायें हम दादी के पत्रों से प्राप्त करते। हमारा जीवन आगे कैसे बढ़े,

इस पर दादी हमेशा ध्यान खिंचवाती। छह-सात बार दादी जी का उड़ीसा आना हुआ। प्रत्येक बार कुछ न कुछ आगे बढ़ने की प्रेरणा दादी जी से प्राप्त होती रही। पहली बार दादी जी ने कहा, यहाँ बहनों के लिए एक बैंक एकाउन्ट होना चाहिए और तुरंत दादी जी ने अपने पास से पाँच सौ रुपया देकर एकाउंट खुलवाया। इतनी प्यारी दादी सभी प्रकार से हमारा ध्यान रखती। मधुबन में कभी कोई प्रोग्राम होता तो दादी कैसेट भेजती। एक बार दादी जब कटक से वापस जा रही थी तो स्टेशन पर तीस-चालीस बहनों और तीस-चालीस कुमारों का संगठन देखा। जाते-जाते दादी ने कहा कि कमलेश, इनको नज़र न लग जाये, अविनाशी टीका लगा देना।

वरदानी बोल

एक बार जब कटक में ज़मीन ली, फाउण्डेशन डाला गया, प्यारी दादी जी आईं, बहुत धूमधाम से कार्यक्रम हुआ। मैंने कहा, दादी जी आपने फाउण्डेशन डाला है तो आपको ही इसका उद्घाटन करना होगा। दादी जी ने कहा, दादी एक बार आयेगी, या तो फाउण्डेशन पर या उद्घाटन पर। मैंने कहा, दादी, यहाँ तो आपको दोनों में आना होगा तो दादी ने कहा, अच्छा देखेंगे। फिर अमृतवेले मैंने दादी से कहा, दादी यह मकान कैसे बनेगा, इसका बजट सिर्फ कागज़ में है, हाथ में कुछ भी नहीं। प्यारी दादी ने मुझे ऐसा वरदान दिया, सिर पर हाथ रखकर कहा, तुम यहाँ बीस साल से सेवा कर रही हो, देखना यह चुटकियों में सबसे जल्दी बनेगा। दादी के मुख में गुलाब। वही हुआ। दादी जी जो कहती वो वरदान के रूप में हमारे सामने प्रैक्टिकल होता। दादी यहाँ से गई और जाते ही फाउण्डेशन के लिए पच्चीस हज़ार रुपये का ड्राफ्ट भेजा और कहा, धीरज से करते चलो तो कार्य शीघ्र ही सफल हो जायेगा। ऐसे दादी जी में अपार धीरज था और सचमुच ही दो वर्ष में मकान बनकर पूरा हो गया।

ममतामयी माँ

दो साल के बाद दादी कोलकाता म्यूज़ियम के उद्घाटन कार्यक्रम में आई। उसी समय नये भवन के उद्घाटन अर्थ दादी जी हमारे पास भी आई। जून 8, 1992 को प्यारी दादी के करकमलों द्वारा उद्घाटन हुआ। प्यारी दादी ने कहा, यह कमलेश ऐसी ममतामयी है जो मुझे दो बार खींच लिया, फाउण्डेशन में भी और उद्घाटन में भी। राजस्थान में ऐसी जगहें हैं जहाँ मैं एक बार भी नहीं गई और यहाँ चार-पाँच बार आ चुकी हूँ। ऐसी थी हमारी माँ स्वरूपा प्यारी दादी। आज भी दादी जी के साथ का अनुभव और दादी की यादों से अपना जीवन चला रही हूँ।

दादी जी हमेशा एकता का पाठ पढ़ाती। वे सत्यता और पवित्रता की देवी थी। जो बात कह देती थी वो एकदम सत्य हो जाती थी। सन् 1976 की बात है, उस समय मेरे पास नीलम बहन थी। दादी-दीदी हमेशा हमें नीलकमल की जोड़ी कहती थी। पत्र में भी नीलकमल कहकर संबोधित करती थी। दादी जी के सारे पत्र आज भी मेरे पास हैं। जहाँ भी रहें, बीच-बीच में पत्र पढ़ते हैं और हमेशा दादी जी को अपने पास अनुभव करते हैं। जब भी मधुबन में जाती तो प्रात: रोज़ दादी जी को गुडमार्निंग करने जाती, वह एक मिनट का मिलन, मीठे गुडमार्निंग के बोल, दादी से नैन मुलाकात हमारे जीवन में लाखों खुशियाँ भर देती जो सारा दिन खुशी में ही व्यतीत होता। हमें अनुभव होता, दादी का प्यार, दादी की छत्रछाया हमारे साथ है और सदा रहेगी। आज भी हम उसी अनुभव में रहते हैं। बाबा के साथ दादी जी का फोटो मेरे कमरे में है। मैं बाबा और दादी को याद करके कोई भी कार्य करती हूँ तो पूर्ण सफलता मिलती है। अनेक दिव्यगुणों का प्रकाश भी प्राप्त होता है। ऐसी प्रेरणा की स्त्रोत प्यारी दादी जी को हम कभी भूल नहीं सकते। ❖

दादी जी के संग बीते कुछ अनमोल क्षण

• ब्रह्माकुमार सुरेश, भिलाई (जिला दुर्ग)

न चाहते हुए भी न जाने क्यों सामने आ जाते हैं वो दृश्य जो भुलाये नहीं भूलते। हर मुलाकात एक यादगार बन गई जिसे सदा संजोये रखने को दिल कहता है। उन पलों की स्मृति जैसे हृदय को झंकृत कर देती है और प्रेरणा देती है उन जैसा बनने की। कितना निर्मल व विशाल हृदय था उनका। जिसने उनको देखा सदा ही वात्सल्यमयी, करुणामयी माँ व योग्य मार्गदर्शक के रूप में पाया। उनके साथ की कुछ घटनायें सर्व के लाभार्थ प्रस्तुत हैं –

दिव्यमूर्त

लगभग 14 वर्ष पूर्व माउंट आबू स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय में मैं सेवार्थ उपस्थित था। एक दिन सुबह दस बजे खबर मिली कि दादी जी पांडव भवन से निकल संग्रहालय होते हुए गुजरात सेवार्थ जा रही हैं। आध्यात्मिक संग्रहालय की निमित्त बहन जी, वरिष्ठ भाई व हम चार-पाँच सेवाधारी भाई फूल व गुलदस्ते लेकर सड़क पर खड़े होकर उनकी कार का इंतज़ार करने लगे। तभी एक बुजुर्ग भाई राजस्थानी पगड़ी पहने हमारी तरफ आया और पूछा कि आप लोग यहाँ क्यों खड़े हो? मैंने उन्हें खड़े होने का उद्देश्य बताया और कहा कि आप भी उनके दर्शन कर लो। वह खड़ा हो गया। तभी दादी जी की कार आई। सबने दादी को गुलदस्ते व फूल भेंट किये। मैंने भी फूल भेंट किया और कहा कि यह राजस्थानी भाई भी आपके दर्शन हेतु खड़ा है। दादी जी ने अपने हाथ का फूल तुरंत उस भाई को दिया व मधुर दृष्टि देते हुए सबको टोली दी। दादी जी की कार आगे बढ़ गई व हम सभी उस अद्भुत रचयिता की याद में भावविभोर खड़े थे। तभी मैंने राजस्थानी भाई से उसका अनुभव पूछा तो गद्गद् कंठ से वह सिर्फ इतना ही कह सका कि **ये तो देवी हैं, देवी, इंसान नहीं। इतना निर्मल था दादी जी का सर्व आत्माओं से प्यार जो अनजान लोग भी उन्हें देवी समझते थे।**

तपस्वीमूर्त

ज्ञानसरोवर प्रांगण में सिन्धी सम्मेलन आयोजित था, कई देशों के सिन्धी भाई आये हुए थे। प्रतिदिन सुबह राजयोग की क्लास होती थी। चौथे दिन प्रातः सभा में दादी जी ने हालचाल पूछा तो सबने एक स्वर में ओ.के. कहा लेकिन कइयों की शिकायत थी कि हमारा योग परमात्मा से जुड़ नहीं पा रहा है। उसी समय दादी जी ने सभा में कहा कि अरे, वह तो हमारा सच्चा पिता है, उसे तो भूलना मुश्किल होना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि ठीक है, आज शाम स्वयं दादी व अन्य सभी दादियाँ स्टेज पर बैठकर योग करायेंगे। आज सभी का योग परमात्मा से जुटकर रहेगा, यह हमारी गारंटी है। शाम को योगाभ्यास शुरू हुआ। उस समय मधुबन में उपस्थित सभी आठ दादियाँ स्टेज पर बैठीं। दादी जी बीच में विराजमान थीं। बड़ा ही अद्भुत दृश्य था। इतनी दादियों को एक साथ योग के प्रकंपन फैलाते देखने का मेरा यह प्रथम व अंतिम अनुभव था। कब एक घंटे का समय बीत गया, किसी को पता ही नहीं चला। योग के पश्चात् भी वहाँ किसी को आवाज़ में आने की इच्छा नहीं हो रही थी। सभी सिन्धी भाइयों की शिकायत समाप्त हो गई व सभी सुन्दर अनुभव लेकर अपने-अपने देशों में लौटे। ऐसा था दादी जी का तपस्वीमूर्त स्वरूप।

प्रेममूर्त

एक बार हम आठ कुमार बापदादा की सीज़न में बाबा से मिलने शान्तिवन पहुँचे। नहाधोकर सर्वप्रथम तपस्याधाम में बैठने हेतु दादी कॉटेज के सामने वाले रास्ते से होकर गुज़र रहे थे। अचानक क्या देखा, दादी कॉटेज के बाहर कुर्सी पर दादीजी अकेली बैठी थीं और हम सभी को इशारे से बुला रही थीं। वहाँ आसपास कोई भी नहीं था। हमको तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। हम सबने एक-दो को देखा व सभी दादी जी के सम्मुख पहुँचे व

ओमशान्ति बोला। दादी जी ने प्यार भरी दृष्टि देते हुए पूछा, कहाँ से आये हो? ठीक-ठाक पहुँच गये? रहने को ठीक मिला? हम तो सिर्फ दादी को देख रहे थे व सिर हिला रहे थे। किसी के मुख से बोल नहीं निकल रहे थे। सभी एक अद्भुत सुख में निमग्न थे। **मन में सबके यही था कि इतनी बड़ी संस्था की मुख्य प्रशासिका व इतनी निर्मान कि स्वयं बुलाकर हमसे मिल रही हैं। हमारा समाचार पूछ रही हैं।** हम तो कोई वी.आई.पी. नहीं हैं। इसी प्रकार 15-20 हज़ार की सभा में भी कई बार सबसे पूछती थीं कि किसी को कोई भी समस्या हो तो दादी को कॉटेज में भी आकर कह सकता है। उनके ऐसा पूछने से ही सबकी सर्वसमस्यायें जैसे समाप्त हो जाती थीं। वे सभी को बच्चे जैसा ही समझती थीं। एक बार उनका छोटा-सा ऑपरेशन ग्लोबल हॉस्पिटल में किया गया था। डॉक्टरों के लाख मना करने के बाद भी अगले ही दिन हरा ऐप्रन पहने ही डायमण्ड हॉल में हम बच्चों से मिलने आई। आते ही उन्होंने कहा कि आप बच्चों से मिले बगैर दादी रह नहीं सकती इसलिए डॉक्टरों की राय न मानते हुए भी दादी को आना पड़ा। दादी जी को बच्चों के प्यार में अपने शरीर के स्वास्थ्य का भी ख्याल नहीं रहता था। ऐसी त्यागमूर्ति, प्रेममूर्ति थी दादी जी! क्यों न भगवान बलिहार जाये ऐसी महान आत्मा पर! ❖

सकारात्मक जीवन शैली

ब्रह्माकुमार भारत भूषण, पानीपत

एक बार मैं ओ.आर.सी. दिल्ली में, सेवार्थ जा रहा था, अचानक किसी गाड़ी को बचाने के कारण ड्राइवर भाई ने ज़ोर से ब्रेक लगाया, गाड़ी उलट गई। मेरा बायाँ हाथ गाड़ी के नीचे आ गया। खून बहने लगा। आसपास चारों ओर लोग इकट्ठे हो गये। मैं मुस्कराते हुए बोला, मुझे कुछ नहीं हुआ है, बिल्कुल ठीक हूँ। फिर लोगों ने गाड़ी को सीधा किया। मेरे बायें हाथ की उँगली कट गई थी। खैर मैंने समझा, कोई बात नहीं, इसमें भी कल्याण है। दर्द तो बहुत हो रहा था लेकिन आत्मिक अभ्यास से उसकी फीलिंग बहुत कम हो गई थी। ड्राइवर को हॉस्पिटल में ले जाया गया और मुझे भी। सर्जन ने बिना सुन्न किये टांके लगाए। मैंने पक्का निश्चय किया था कि कितना भी दर्द हो, मेरे मुख से हाय ना निकले एवं मुस्कराहट भी न जाए। इसलिए आत्मिक स्वरूप में टिककर स्वयं को प्यारे शिवबाबा की गोद में अनुभव करने लगा और शिवबाबा से कहा, यह तन आपका है, हाथ कटा तो आपका, मैं तो इससे अलग हूँ। पट्टी आदि कराने के पश्चात् मैं ओ.आर.सी. चला गया। मेरे बायें हाथ की एक उँगली 70% नष्ट हो गई थी। मैंने ओ.आर.सी. में यही कहा, थोड़ी चोट लगी है इसलिए पट्टी बाँधी है।

चार दिनों के बाद एक कंपनी के अधिकारीगण का ग्रुप ट्रेनिंग लेने के लिए वहाँ आया। उसमें एक सत्र मुझे भी लेना था जिसका विषय था, 'सकारात्मक चिन्तन करने की कला'। सत्र के अंत में एक अधिकारी ने खड़े होकर मुझसे पूछा, क्या आप वही व्यक्ति हैं जिनका चार दिन पूर्व गुड़गाँव में एक्सीडेन्ट हुआ था। मैंने कहा, जी हाँ। तो उन्होंने दो शब्द कहने की अनुमति माँगी। मैंने उन्हें माइक दे दिया। उन्होंने कहा, 'दोस्तो, पॉजिटिव थिंकिंग (सकारात्मक चिन्तन करने की कला) पर प्रवचन जो इन्होंने दिया है, यह केवल भाषण नहीं, इनका प्रैक्टिकल लाइफ है क्योंकि चार दिन पूर्व जब इनके साथ दुर्घटना घटी, मैं वहीं से गुज़र रहा था। मैंने गाड़ी रोकी, देखा, इनके कटे हाथ से खून बह रहा था लेकिन ये मुस्कराये जा रहे थे और कह रहे थे, मुझे कुछ नहीं हुआ, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। घर पहुँच कर मैंने पत्नी को बताया कि आज एक सज्जन कार के नीचे आ गये लेकिन वे मुस्कराये जा रहे थे और मैं भुला नहीं पा रहा हूँ। मुझे उस रात नींद भी नहीं आई, सचमुच इनका जीवन पॉजिटिव है।' उनका अनुभव सुनकर सभी ने ताली बजाई।

यह अनुभव इसलिए लिखा कि वाणी से ज़्यादा कर्म प्रभावशाली होते हैं। सकारात्मक जीवन शैली का वर्णन करने से पहले सकारात्मक जीवन शैली अपनायेंगे तो हमारे कर्मों द्वारा स्वत: सेवा होती रहेगी। ❖

उत्पादन और लाभ बढ़ा राजयोग से

• ब्रह्माकुमार विश्वनाथ, मारडपल्ली (सिकन्दराबाद)

मैं पेशे से एक उद्योगपति हूँ। पिछले तेरह वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। दस वर्षों तक सरकारी दूरसंचार विभाग में इंजीनियर के रूप में कार्य करने के बाद उसे छोड़कर अपनी योग्यता व लगन से एक कंपनी में जनरल मैनेजर बन गया। इसके बाद, और तरक्की करने की इच्छा से मैंने एक लघु उद्योग शुरू किया। कंपनी को आगे से आगे बढ़ाने की लगन ने मेरा कार्य बढ़ा दिया। बुद्धि में अभिमान आ गया कि मैं एक कंपनी का प्रबंध संचालक हूँ और मेरी योग्यता से कंपनी अच्छी चल रही है। कार्य का तनाव इतना बढ़ गया कि मुझे सिरदर्द रहने लगा। रात में 10 बजे नींद की गोलियाँ खाकर सोता तो दो बजे ही आँखें खुल जाती। इस परेशानी के कारण मैं डॉक्टर के पास गया। वे ब्रह्माकुमार थे। उन्होंने कहा कि अगले रविवार को मैं आप और आपकी युगल को ब्रह्माकुमारी आश्रम ले जाऊँगा।

सिरदर्द का कारण थी अनावश्यक सोच

प्रथम दिन से ही सेवाकेंद्र पर मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरा भक्ति के कर्मकांडों में विश्वास नहीं था। भक्ति संबंधी क्रियाओं को देखकर मन में क्या, क्यों के प्रश्न उठते थे। जब साप्ताहिक कोर्स किया तो भक्ति मार्ग की सभी क्रियाओं का आध्यात्मिक रहस्य समझ में आया। केरल में एक तीर्थ स्थान है जहाँ पहुँचने के लिए 40 कि.मी. पैदल यात्रा करनी पड़ती है और 40 दिनों तक कड़े नियमों का पालन करना पड़ता है जैसे कि सुबह जल्दी उठकर पूजा करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना और खाना खुद पकाना आदि-आदि। खुद का कारोबार शुरू करने से पहले मैं अक्सर यह यात्रा किया करता था। जब तक यह व्रत चलता, मुझे बहुत अच्छा लगता, चेहरे पर रौनक आ जाती। उन दिनों मन में संकल्प आता था कि सिर्फ 40 दिन ही क्यों? क्यों नहीं साल के 365 दिन इस व्रत का पालन किया जाये। जब मैंने उद्योग शुरू किया तो अति व्यस्तता और समयाभाव के कारण वहाँ जाना बंद हो गया।

जब ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान सुना तो मुझे तीर्थयात्रा की स्मृति हो आई और जिन नियमों में मैं बंधना चाहता था वैसे नियम देखकर अति हर्ष हुआ। ज्ञान की सब बातें अच्छी तरह समझ में आने के बाद मेरी सभी समस्याएँ समाप्त हो गई। पहले जो मुझे सिरदर्द रहता था उसका एक विशेष कारण यह था कि अगर मुझे किसी व्यक्ति से प्रात: आठ बजे मिलना है तो रात को 2 बजे आँख खुलते ही मेरे सारे संकल्प उस व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमने लगते थे। यह अनावश्यक सोच

ही सिरदर्द का कारण थी। मैंने जैसे ही राजयोग का अभ्यास शुरू किया, व्यर्थ विचार चलने बंद हो गए। व्यसन मेरे जीवन में पहले से ही नहीं थे। कभी-कभार प्याज का जो थोड़ा-बहुत प्रयोग होता था वह और बाहर होटलों में भोजन करना बंद कर दिया। भोजन की शुद्धता आ जाने से आत्मिक बल बढ़ा।

नींद की समस्या मिटी योगाभ्यास से

एक दिन निमित्त टीचर लीला दादी जी ने मुझे बाबा के कमरे में बैठाकर योग कराया। जैसे ही उन्होंने मुझे दृष्टि दी, मैं देह से न्यारा हो उड़ गया। वह योग का मेरा पहला अनुभव था। उसके बाद मेरे लिए योग आसान हो गया। योग में नई-नई अनुभूतियाँ करने की चाह बढ़ गई। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होते ही एक-दो मास के अंदर मेरी नींद की गोलियाँ बंद हो गईं। चिंता कम हो गई, नींद अच्छी आने लगी, कार्य में एकाग्रता बढ़ गई।

लौकिक और अलौकिक का बैलेंस

मैंने सोचा, ज्ञान में चलने के बाद यदि लौकिक ज़िम्मेवारियों की तरफ कम ध्यान दिया गया तो मुझ पर भी दोष आयेगा और संस्था की भी ग्लानि होगी। इसलिए मैंने लौकिक और अलौकिक का बैलेंस बनाकर रखा। लौकिक कारोबार में मैंने कभी भी ना तो सरकार के साथ टैक्स के संबंध में और ना ही ग्राहकों के साथ लेन-देन में बेईमानी की। मेरी ईमानदारी व पारदर्शिता के कारण ही ग्राहकों को मुझ पर और मेरे उत्पादित माल पर पूरा विश्वास है। आप जानते हैं कि व्यापारी और उद्योगपति नए वर्ष पर कैलेण्डर और डायरियाँ वितरित किया करते हैं परंतु मैंने इनके स्थान पर 300 लोगों को एक वर्ष के लिए ईश्वरीय विश्व विद्यालय से प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी मैगज़ीन 'प्यूरिटी' की प्रतियाँ नि:शुल्क लगवा दीं। इससे बहुत अच्छी सेवा हुई।

कर्मचारियों के व्यसन छूटे कार्यक्षमता बढ़ी

फैक्ट्री घर से 25 कि.मी. दूर है। मैंने फैक्ट्री में बाबा का कमरा बनाना शुरू किया तो विचार आया कि मेरे साथ-साथ मेरे सहयोगी कर्मचारी भी राजयोग का अभ्यास करें। इसलिए मैंने अपने सभी कर्मचारियों को उनकी ड्यूटी के दौरान ही साप्ताहिक कोर्स कराया तथा राजयोग का अभ्यास भी कराया। इससे कर्मचारियों में बहुत परिवर्तन देखने को मिला। उनके व्यसन छूट गए जिससे उनकी कार्यक्षमता बढ़ी। इससे कंपनी का उत्पादन बढ़ा और लाभ बढ़ा। फैक्ट्री का वातावरण बड़ा स्वच्छ, शुद्ध एवं पवित्र बन गया। कोई भी सरकारी अधिकारी या अन्य कोई मुझसे मिलने आता है तो थोड़े समय ही कारोबार की बातें होती हैं बाकी समय ज्ञान-चर्चा में ही सफल होता है। उन्हें पता है कि यह ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शिक्षाओं पर चलता है और फैक्ट्री में भी ये शिक्षाएँ लागू हैं। मेरी कंपनी के बाहर लिखा है – *'Company working on value based system'*।

सकारात्मक दृष्टिकोण

मैंने लगभग तीन हजार टेबल कैलेण्डर ईश्वरीय सेवार्थ गिफ्ट में दिए हैं। मेरा अपने कर्मचारियों के प्रति और कर्मचारियों का मेरे प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। हम एक-दो के सहयोगी के रूप में कार्य करते हैं। मालिक-कर्मचारी का संबंध ना होकर सहकर्मी का संबंध हो गया है। मेरे ऑफिस में छोटे से छोटा कर्मचारी भी आ जाए तो मैं बड़े मान-सम्मान से उससे बातें करता हूँ। मेरे इस व्यवहार ने उन पर अच्छा प्रभाव डाला है। मेरे घर में अगर कोई भी उत्सव होता है तो सबसे पहला भोज या सौगात फैक्ट्री कर्मचारियों को ही मिलती है इससे मुझे लगता है कि मेरा परिवार काफी बड़ा हो गया है।

मेरे परिवार के लोग, नाते-रिश्तेदार भी मुझे सम्मान की नज़र से देखते हैं। उनके पारिवारिक उत्सवों में भी मैं जाता हूँ। वे समझते हैं कि अब इसका जीवन बहुत अच्छा बन गया है। पिछले साल लंदन में दादी जानकी जी के साथ मैं दस दिन रहा। वहाँ मैंने दादी जी से धंधे से अवकाश लेने की बात कही तो दादी जी ने मेरी उम्र, स्वास्थ्य व धंधे के बारे में पूछा। मैंने कहा, ये सब बातें ठीक हैं। तब दादी जी ने कहा – सहज चल रहा है तो चलाते रहो, अवकाश का संकल्प भी मत करो।

देने में लेने का अहसास

जब-जब मैंने यज्ञ के किसी कार्य में धन का सहयोग दिया है तो मेरा यह अनुभव रहा है कि मेरा फँसा हुआ पैसा भी कहीं न कहीं से निकल आया या लाभ बढ़ गया। इसलिए सहयोग देते हुए भी मुझे लगता है कि मैं सहयोग दे नहीं रहा हूँ बल्कि सहयोग ले रहा हूँ।

मेरा पुत्र अमेरिका में एक अच्छी कंपनी में नौकरी करता है और पुत्री भारत में है। उन्हें खुशी है कि हमारे माता-पिता अपनी वानप्रस्थ अवस्था में इतनी अच्छी संस्था से जुड़ गए हैं। जब भी समय मिलता है वे भी ईश्वरीय ज्ञान सुनने सेवाकेन्द्र पर जाते हैं और यथाशक्ति ईश्वरीय सेवा में सहयोग भी देते हैं।

(शेष.. पृष्ठ 22 पर)

दो धागे करें कमाल

• ब्रह्माकुमारी नीलम, इटावा

रक्षाबंधन है रक्षा का पर्व। ज़रा सोचिये, देश-रक्षा हेतु जल-थल-वायु सेनायें कार्यरत हैं, प्रांतीय रक्षार्थ प्रांतीय पुलिस, समाज रक्षार्थ तथाकथित सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा बुद्धिजीवी प्रयासरत हैं। अपने परिवार की रक्षार्थ आप स्वयं प्रयत्नशील रहते हैं, तो फिर रक्षाबंधन पर रक्षा की कामना क्यों? किससे किसकी रक्षा की आवश्यकता है?

वास्तव में, आज आवश्यकता इस बात की है कि आत्मा की रक्षा मनोविकारों से की जाये, प्राचीन उच्च आदर्शों व नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित किया जाये, स्वर्णिम भारत की विलुप्त प्राय: तस्वीर को पुन: उभारा जाये। यह तभी संभव होगा जब पवित्रता के प्रतीक 'विषतोड़क पर्व', 'मर्यादा रक्षक व संस्कृति रक्षक पर्व' रक्षाबंधन को केवल एक दिन न मनाकर, जीवनपर्यन्त मनाते हुए, विकारों से आत्मा की रक्षा का वचन निभायें। हम अपने कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान हों तभी समाज व विश्व सुरक्षित रह सकेंगे। परन्तु यह सब करने के लिए मानव को आत्मबल की आवश्यकता है जो परमात्मा के सत्यस्वरूप को जानकर उससे संबंध जोड़कर ही मिल सकता है। यदि हम निज (आत्मा) को परमात्मा की किरणों *(God Rays)* के बीच अनुभव करें तो मनोविकारों के वार से सुरक्षित हो सकते हैं।

पौराणिक कथनानुसार देवराज इंद्र ने देवासुर संग्राम में विजयश्री प्राप्त करने के लिए अपनी पत्नी इंद्राणी से रक्षा-सूत्र बंधवाया था। इसका अर्थ यह है कि गृहस्थ जीवन में भी पवित्रता रूपी दिव्य गुण धारण करके ही विकारों रूपी असुरों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। प्राचीनकाल में इस पर्व की मान्यता, समाज को पुन: संस्कारित करने वाले पर्व के रूप में रही है। ब्राह्मण यजमानों को आत्मरक्षक, समाज व देश रक्षक, मर्यादा रक्षक, चरित्र व संस्कृति रक्षक बनने की प्रतिज्ञा करवाकर यह दृढ़ संकल्प का सूत्र बाँधते थे। आज भी भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन पग-पग पर आध्यात्मिक रहस्य संजोये हुए है।

मनाने की विलक्षण प्रक्रिया

यूँ तो हम सभी स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी हैं, किसी भी प्रकार का बंधन हमें स्वीकार्य नहीं परन्तु स्नेह *(Love)*, शान्ति *(Peace)* और सत्यनिष्ठा *(Integrity)* का संदेश देने वाले इस बंधन को बाँधने और बँधवाने के लिए बहनें और भाई दोनों प्रतीक्षारत रहते हैं। आज के जीवन में धन, ताकत और बुद्धि में पुरुष को प्रधानता मिलती रही है परन्तु इन तीनों की अथाह भंडार, माता महालक्ष्मी, माँ दुर्गा व माँ सरस्वती से ही पुरुष सदैव याचना करता रहा है। **अत: रक्षा की आवश्यकता तो नर को है, नारी को नहीं। वह तो सदा से ही दात्री रही है पर कौन-सी नारी? वह नारी जो देहभान से उपराम होकर आत्म-बल और परमात्म-बल से सदा सुसज्जित रहती है। उस बल के प्रतीक हैं देवियों के सर्व अलंकार।**

जब बहनें, भाइयों के मस्तक पर आत्म-स्मृति का तिलक लगा कर, राखी बाँध कर दृढ़ प्रतिज्ञा करवाती हैं तो उसके पीछे भाव यही होता है कि भैया, इस नश्वर शरीर के अभिमान में आकर किसी को कुदृष्टि-कुवृत्ति से असुरक्षित मत कर देना। सदा आत्मिक दृष्टि से निहारते हुए हर मानवात्मा के साथ स्नेह, सहयोग, सम्मान भरा व्यवहार करना।

आपने अभी तक रक्षाबंधन पर्व कई बार मनाया होगा परन्तु अब उसके यथार्थ स्वरूप को समझ कर दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि आप पुन: मानवीय मूल्यों को जीवन में धारण करके मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण में सहयोग देंगे। क्या आप अपनी प्यारी बहनों की यह शुभ आशा पूरी करेंगे? मुझे पूर्ण विश्वास है कि क्षण भर में किसी अनजान व्यक्ति को भी अपनत्व का अनुभव कराने वाले राखी के दो धागों की लाज आप अवश्य रखेंगे। ❖

लघु नाटिका

कर्मों का साक्षात्कार

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

पात्र-परिचय : सेठ रत्नलाल – शहर का बड़ा सेठ, छज्जू और रज्जू – सेठ के परिचित, सेठ जी के दो बेटे, दो बहुएँ, एक पोता और एक नौकर, माणिकलाल – ब्रह्माकुमार भाई, धर्मराज, धर्मराज के दो सेवक, चित्रगुप्त

(सेठ रत्नलाल जी अपने मकान के बरामदे में चिन्तामगन स्थिति में टहल रहे हैं)

माणिकलाल – सेठ जी, राम-राम। आइये ना, ठण्डी हवा में सैर भी हो जायेगी, कुछ पुण्य का खाता भी जमा हो जायेगा, मेरे साथ ब्रह्माकुमारी आश्रम चलिए ना!

सेठ जी *(चिन्तातुर भावों के साथ)* **–** भाई, बात तो आपकी सही है पर कई दिनों से कोई धंधा सेट नहीं बैठ रहा, घाटा ही घाटा चल रहा है। थोड़ी सेटिंग होने दो फिर चलूँगा।

दूसरा दृश्य

(बरामदे में खड़े सेठ रत्नलाल सुबह-सुबह नौकर को कुछ हिदायतें दे रहे हैं)

माणिकलाल – अरे सेठ जी, बधाई हो! अबकी बार तो आपका धंधा चल पड़ा, अब तो चिन्ता मिट गई, अब तो चलिए कुछ पारलौकिक कमाई भी कर लीजिए।

सेठ जी – भाई, सब आप लोगों की और प्रभु की मेहरबानी है, धंधा चल तो पड़ा पर थोड़ा जम जाने दो, फिर तो आपके ही साथ चलना है, और करना क्या है?

तीसरा दृश्य

(सेठ रत्नलाल अपनी नई कोठी के सामने बने बगीचे में कुर्सी पर बैठे बही-खाते देख रहे हैं)

माणिकलाल – सेठ जी, अब तो आपका धंधा जम गया, ऐसा जम गया कि कई पीढ़ियों का प्रबंध हो गया, अब तो आप भगवान के लिए कम-से-कम एक घंटा तो निकालिए।

सेठ जी – भाई, क्या बताऊँ, धंधा इतना बढ़ गया है कि साँस लेने की भी फुर्सत नहीं। पहले थोड़ा टहल लिया करता था, अब तो सुबह-सुबह ही बही-खातों में उलझना पड़ता है। धंधा है तो यह सब करना ही पड़ता है। इसे छोड़ कैसे इधर-उधर जा सकता हूँ?

माणिकलाल *(मन ही मन)* **–** अजीब आदमी है, धंधा नहीं था तो भगवान के लिए फुर्सत नहीं, धंधा लग गया तो भी भगवान के लिए फुर्सत नहीं और धंधा जम गया तो भी भगवान के लिए फुर्सत नहीं।

चौथा दृश्य

(कपड़े से ढका सेठ रत्नलाल का शव उसकी कोठी के आंगन में पड़ा है। लोग अंतिम दर्शन की औपचारिकतायें पूरी कर रहे हैं। कोई-कोई फूल अर्पित कर रहा है)

छज्जू *(रज्जू के कान में)* **–** सेठ ने पिछले पाँच साल में इतना कमाया कि अगली दस पीढ़ियों का प्रबंध हो गया पर था बड़ा कंजूस। कभी ईश्वर अर्थ एक आना भी नहीं निकाला।

रज्जू *(छज्जू के कान में)* **–** नहीं लगाया तो साथ भी तो लेकर नहीं गया। इसी धरती पर से इकट्ठा किया और इसी धरती पर छोड़ दिया। अब बच्चे जो करें, सेठ कौन-सा टोकने आने वाला है।

दृश्य पाँच

(धर्मराज का दरबार)

चित्रगुप्त – महाराज, मृत्युलोक से आज एक सेठ आपकी पुरी में आये हैं, कहो तो हाज़िर करूँ?

धर्मराज – अवश्य, अवश्य।

(दो सेवक सेठ जी को सूक्ष्म काया में लेकर आते हैं)

धर्मराज – कहो सेठ, क्या कमाकर लाए। हम हरेक आत्मा से यह आशा करते हैं कि वह साकार दुनिया के रंगमंच पर जाये तो पुण्यों की कमाई से हाथ भरतू करके लौटे, कहो, क्या कमाई करके लाए?

सेठ जी – महाराज, दो कोठियाँ, दस करोड़ नकद बैंक में, चालीस किलो चाँदी, पाँच किलो सोना, दस-दस लाख के पाँच प्लाट, दो फैक्ट्रियाँ – बस यही सब कमाया।

धर्मराज – सेठ जी, वो तो सब नीचे रह गया। आपके साथ क्या आया, इस समय आपकी मुट्ठी में क्या है?

सेठ जी *(हाथ मलता है, इधर-उधर झांकता है)* **–** महाराज, मैं तो सब बच्चों, बच्चों के बच्चों ... के लिए छोड़ आया, क्या उसका कोई पुण्य नहीं है?

चित्रगुप्त *(बीच में)* **–** महाराज, यह देखिये, सेठ जी का कर्म खाता। देशी घी में मिलावट, राशन में मिलावट, नकली माल के असली दाम, कम तौल और कर चोरी ...।

धर्मराज – सेठ जी, ये सब आपने किये? अपने हाथों किए?

सेठ जी – महाराज, किये तो मैंने पर इनका लाभ तो मैंने नहीं लिया। मैंने तो सारा जीवन सीधी-साधी धोती-कुर्ता पहना है, खाना भी कभी खाया, कभी नहीं खाया, नींद भी कभी की, कभी नहीं की और मैंने तो 12 और 14 घंटे भी दुकान की ड्यूटी बजाई पर जो कमाया वह अपने पर तो नहीं लगाया।

धर्मराज – सेठ जी, जिसके हाथों कर्म होते हैं, ज़िम्मेवार तो उसी को माना जायेगा, फल भी वही पायेगा। सेठ जी, फल तो आपको मिलेगा ही। दूसरी बात, ऐसे कर्मों से प्राप्त लाभ भी कोई भले में थोड़े लगता है। चोरी का धन मोरी में ही तो जाता है। विश्वास न हो तो नीचे झाँक कर देख लीजिये।

दृश्य छह

(सेठ जी की कोठी के अंदर का दृश्य – बड़ी बहू, बड़े कमरे को ताला लगा रही है, छोटी बहू चाबी छीनने की कोशिश कर रही है। बड़े लड़के के हाथ में कुछ कागज़ात हैं जिन्हें लेने के लिए छोटा लड़का लपक रहा है, इसी छीना-झपटी में एक कागज़ फट कर नाली में गिरा है। वह किसी प्लाट की रजिस्ट्री का कागज़ है। प्लाट की कीमत दस लाख है। कागज़ के फटने से इस की मिल्कियत खतरे में पड़ गई है। पर अब भी दोनों का झगड़ा और तू-तू-मैं-मैं ज़ारी है, बड़ा पोता अभी-अभी शराब के नशे में झूमता हुआ अन्दर घुसा है पर उसकी तरफ किसी का ध्यान नहीं है)

सेठ जी – हाय, इस प्लाट को लेने में तो मैंने महीने भर का चैन, भोजन और नींद पूरी गँवा दी थी, इसका यह हश्र?

धर्मराज – सेठ जी, आपकी मुट्ठी पुण्य से तो खाली है पर पाप से कमाये धन के पाप का भार आप पर ही है और पाप का जो धन आप नीचे छोड़ आये हैं, उनके कारण आपके पुत्र जो कुकर्म करेंगे, उसके पाप का कुछ हिस्सा भी ब्याज के रूप में आपको मिलता रहेगा क्योंकि ना आप पाप-कमाई करते और ना वे उस कमाई को पाप में लगाते।

सेठ जी – महाराज, एक बार मुझे नीचे जाने की इजाज़त दे दो, मैं कुछ तो दान-पुण्य में लगा आऊँ।

धर्मराज – सेठ जी, शरीर तो आपका जल चुका है, परकाया प्रवेश करेंगे तो लोग आपको भूत समझेंगे, ऐसे में आपके पुत्र-पौत्र भी आपसे डरेंगे ही। अब नीचे जाने से कोई फ़ायदा नहीं। चूँकि कोई पुण्य आपके खाते में नहीं है अत: धनविहीन, शिक्षा और संस्कारविहीन परिवार में आपको जन्म दिया जा रहा है।

सेठ जी – महाराज, यह तो सरासर अन्याय है। कहाँ मैं सेठ और कहाँ ऐसा परिवार, कोई बराबरी नहीं।

धर्मराज – सेठ जी, किसी के घर में कितना भी अनाज हो पर जब तक वह उसे बोये नहीं, वह अनाज बढ़ता नहीं। इसी प्रकार धन चाहे कितना भी क्यों न हो, जब तक उसे भी श्रेष्ठ कार्यों के रूप में बोते नहीं, फल निकलता ही नहीं। पिछले जन्म का बोया बीज ही तो अगले जन्म में फल बनकर मिलता है। देखो तो यह दृश्य *(माणिकलाल सेठ जी को ब्रह्माकुमारी आश्रम जाने का निमंत्रण दे रहा है और सेठ जी हर बार बहाना बना रहे हैं – वह दृश्य इमर्ज होता है तथा सेठ के चोरी, मिलावट, झूठ, धोखाधड़ी करते हुए कई दृश्य इमर्ज होते हैं)* सेठ जी, इस माणिकलाल बच्चे ने तुमको एक बार नहीं, तीन-तीन बार

जागृत किया, फिर भी तुम नहीं चेते, नश्वर धन के लिए तो रात-रात जागे पर सच्ची कमाई, साथ जाने वाली कमाई के लिए एक घंटा भी महंगा पड़ा, तो अब हो क्या सकता है!

(सेठ दृश्य देखकर रोता है, चिल्लाता है, अफसोस करता है। बार-बार माफी माँगता है)

धर्मराज – अब माफी का समय नहीं है, कोई अन्तिम इच्छा हो तो बताइये, पूरी की जायेगी।

सेठ जी – महाराज, मेरी तरफ से इतना ही संदेश धरती पर भिजवा दो – 'मैं करोड़पति सेठ नश्वर धन के लालच और संग्रह में इतना भरमाया कि मैंने आगे के बारे में कुछ नहीं सोचा। ना समय, ना धन, ना तन, ना मन ईश्वरार्थ लगाया। उसके फलरूप आज मैं सब कुछ गँवा कर अभावग्रस्त परिवार में जन्म लेने जा रहा हूँ, मेरे बन्धु मुझसे शिक्षा लें और मेरे जैसी गलती ना करें।'

(समाप्त)

ऐसी राखी अबकी बार

ब्रह्माकुमार सतीश कुमार, आबू पर्वत

बाँधें और बँधायें ऐसी राखी अबकी बार
आये सद्व्यवहार सभी में, स्वर्ग बने संसार
छलके अमृतधार, भर दें इतना निर्मल प्यार

राखी ने पवित्रता की लाज जगत में राखी
यही स्नेह और भाइचारे की सच्ची-सच्ची साखी
इससे कलिकाल तक में भी पवित्रता है बाकी
रक्षाबंधन स्नेह-शुचिता की रक्षा का यादगार

दो धागों में राखी के, उम्मीदें भरते आये
वादे-कसमें खाये हमने कितने स्वप्न सजाये
कितने मगर निभाये उनमें कितने तोड़ बहाये
अबकी बार न होगी ऐसी जैसी हुई हर बार

प्राण हमारी यह राखी, प्रभु-प्रीत की है पहचान
भाई-बहन के निर्मल पावन संबंधों का देती ज्ञान
कायम रखे पावनता के इसने सभी निशान
हाहाकार बिना इसके, इससे ही जयजयकार

शुभ संकल्पों की राखी जो परमपिता ने बाँधी
ईश्वरीय मर्यादाओं से रुकती है माया की आँधी
राखी हमें दिलायेगी फिर, जो संपदा हमने गंवा दी
बनें फरिश्ता चलें वतन में, यह अव्यक्ति उपहार

रक्षाबंधन - आज के .. पृष्ठ 1 का शेष

तूफान के झटके से टूट भी जाता है, तो अगली राखी पर फिर से नया सूत्र उस स्नेह में एक नई ज़िन्दगी और नई तरंग भर देता है। इस प्रकार यह स्नेह की धारा जीवन के अंत तक ऐसे ही बहती रहती है जैसे कि गंगा की धारा अपने उद्गम स्थान से लेकर सागर के संगम तक मधुर गति से प्रवाहित होती रहती है।

राखी – आज के संदर्भ में

आज हर बहन जब अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधे तो वह राखी इस बात का प्रतीक हो कि 'भैया, जैसे तुम अपनी इस बहन को एक निर्मल स्नेह की दृष्टि से देखते हो और अपनी इस बहन की रक्षा का संकल्प लेते हो, वैसे ही इसको बाँधकर अपने मन में यह प्रतिज्ञा करो कि तुम भारत की, नहीं-नहीं, विश्व की हर नारी को बहन की दृष्टि से देखोगे। तुम हर माता-बहन की लाज का ख़्याल रखोगे।' ऐसी हो राखी घर-घर में आज के संदर्भ में। ❖

दाता की अनुपम देन – संतुष्टता

• ब्रह्माकुमार डॉ. संजय माली पाचोरा, महाराष्ट्र

संतुष्टता जीवन की सर्वोच्च प्राप्ति है। कहते हैं, संतोष ही सबसे बड़ा धन है। किसी के पास सब कुछ है मगर संतुष्टता न हो तो सब व्यर्थ है। कहा गया है –

गोधन, गजधन, वाजिधन
और रतन-धन खान।
जब आवे संतोष-धन
सब धन धुरि समान।।

संतुष्टता को छू लेने के बाद किसी भी भौतिक वस्तु के लिए हमारी भागदौड़ खत्म हो जाती है। परमात्मा में ही बुद्धि स्थिर होने के कारण दिल फिर अन्य किसी चीज़ में रमता ही नहीं, यह बात अनुभवसिद्ध है। बेहद का वैराग हर व्यक्ति को संतुष्ट बना देता है। परमात्मा को पा लेने के कारण व्यक्ति सच्ची खुशी पा लेता है। महामुनि चाणक्य का कथन है – **'नास्ति संतोषात परम सुखम्'** अर्थात् संतोष से बढ़कर और कोई सुख नहीं। संतोष की अनुभूति का स्थान मनुष्य का मन है। नाशवान संसार की चाहत और चिंता का परित्याग करने से मन बेपरवाह होकर मानो संसार का शहंशाह बन जाता है, ऐसा कबीर जी का भी अनुभव है –

चाह गई, चिंता मिटी
मनवा बेपरवाह।
जाको कछु न चाहिए
वो शाहन का शाह।।

संतुष्टता का अर्थ है आत्मा का आत्मा में रमण या आत्मा की परमात्मा से लगन। जब ज्ञान-चर्चा हमारे ज़हन में उतरती है, सद्गुणों का महत्त्व समझ में आता है तब अपने आप मूल्यों की धारणा होने लगती है। जिस प्रकार पानी के बिना मछली का रहना असंभव है उसी प्रकार आत्मा का परमात्मा के बिना जीना कठिन है। संतुष्टता ही संपूर्णता की प्राप्ति का आधार है। संतुष्टता आत्मा की शालीनता है। यही व्यक्तित्व को महानता प्रदान करती है। संतुष्टता बहुत ऊँची स्थिति है। इसे पूर्णता का आइना भी कह सकते हैं। इस संसार में सज्जन तथा साधु मन के लोग ही सुखी देखे जा सकते हैं –

भू दुखी अवधूत दुखी,
दुखी रंक विपरीत।
कहत कबीरा सब दुखी,
सुखी संत मनजीत।

मन को जीतने वाले ही संतुष्ट रह सकते हैं। परमात्मा का राज़ जानने वाला हर बात में राज़ी हो जाता है। संतुष्टता दाता की अनुपम देन है। संतोष में ही आत्मा का आराम छिपा है। मन का भटकाव रुक जाने से सच्ची शांति अनुभव होती है।

इच्छाओं से उपराम होना ही भवसागर पार करना है इसलिए संतुष्टता को 'परमपद' कहा गया है। असंतुष्टि तो मनुष्य को सदा आकुल-व्याकुल बनाती है, इसी से अशांति पैदा होती है।

अपने आप में तुष्ट ही पुष्ट अथवा ज्ञानी कहलाता है। वह न किसी पर रुष्ट होता है और न ही किसी से वितुष्ट (असंतुष्ट) ही होता है। औरों को सुकून पहुँचाने वाला ही स्वयं सुकून पा सकता है। दुआयें लेने और देने से संतुष्टता का पोषण होता है। समाधानस्वरूप होना कोई साधारण बात नहीं है, यह तो सिद्धि है। संतुष्टता मन की समृद्धि का लक्षण है। यही सुख-शांति की जननी है। संतुष्टता वह स्थानक है जहाँ से परमपिता का दिव्य धाम स्पष्ट देखा जा सकता है। यह ऐसा एरोड्रम है जहाँ से कोई भी आत्मा परमधाम तक की ऊँची उड़ान आसानी से भर सकती है।

संतुष्टता ही पवित्रता का मानक है, आत्मा की शुद्धता का परिचायक है। संतुष्ट मनुष्य देव समान मुस्कराता हुआ दिखाई देता है। जिसके विचार उन्नत, आचार शुद्ध (*crystal clear)* एवं उच्चार शांतिप्रद है वही संतोषी है। संसार का कोई भी व्यक्ति साक्षी भाव से कर्त्तव्यपरायण रहकर संतुष्टता के निकट जल्दी पहुँच सकता है। संतुष्टता आत्मा की आनंदमयी उपराम अवस्था है। संग्रहवृत्ति से लालच और फ़िक्र बढ़ता है और फकीर वही है जिसे कोई

फ़िक्र कभी सताता नहीं। महात्मा कबीर जी के शब्दों में –

बहुत पसारा मत करियो,
करो थोड़े की आस।
बहुत पसारा जिन किया
वे भी गये निरास।।

पैसे से सुविधा अवश्य जुटाई जा सकती है मगर मन की शांति नहीं। केवल विधाता का अलौकिक प्रेम ही हमें संतुष्ट बनाता है। अंतर्मुखता और संपूर्ण समर्पण से ही यह संभव है। भौतिक संसार की किसी भी वस्तु में अथवा इंद्रियों के किसी भी आकर्षण में संपूर्ण समाधान देने का सामर्थ्य नहीं है। अज्ञानी लोग खान-पान, धन-दौलत, आलीशान रहन-सहन एवं कीमती आभूषणों में सुख ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं। पहाड़ खोदकर मानो चूहा पाते हैं। वास्तव में, यही अशांति और कष्टों का कारण है। खूब कमाओ हीरे-मोती पर याद रखो कफन में जेब नहीं होती। **सच्चा सुख तो मालिक का बनने में है, मालिक बनने में नहीं। अमिट शांति तो केवल दूसरों की सेवा में है। औरों को आनंद दिलाने वाले ही आनन्दित रहते हैं। सेवा और त्याग का रूहानी नशा किसी की भी जीवन-दशा बदलने में सक्षम होता है। संतुष्टता ही सतगुरु का स्वर्णिम उपहार है।**

अपनी नज़र को संसार के मायावी दृश्यों से हटाकर परमात्मा की तरफ मोड़ दिया जाये तो हर कोई संतुष्ट हो सकता है। यही ज्ञान का निचोड़ है। किसी ने ठीक ही कहा है –

नज़र बदली तो नज़ारे बदले।
कश्ती ने बदला रुख
तो किनारे बदले।।

आत्मा-परमात्मा का यथार्थ परिचय तथा योग का निरंतर अनुभव संतोषी होने का उत्तम रास्ता है। मोहमाया के चंगुल से छुड़वा कर हम अपने को समाधान स्वरूप बना लेते हैं। ज्ञान की धारणा और योगाभ्यास से व्यक्तित्व महान हो जाता है। ऐसी संतुष्टि अखंड बनी रहती है जो किसी भी बाह्य परिस्थिति से विचलित नहीं हो सकती। संतुष्ट व्यक्ति किसी भी भौतिक आकर्षण एवं प्रभाव से मुक्त होता है। वह तो गुण-रत्नों का भण्डार और ज्ञान-मोतियों का साहूकार बन जाता है क्योंकि '**संतुष्टता सर्व गुणों की खान है, प्रसन्नता उसकी पहचान है।**'

रूहानी प्रसन्नता जिसके भी पास होती है उसके केवल दर्शन मात्र से दूसरों के भय, क्रोध, दुख एवं चिन्ता आदि नकारात्मक भाव समाप्त होते देखे जाते हैं। संतुष्टता ही धरती पर स्वर्ग का अनुभव कराती है और अतृप्ति है नरक। संतुष्टता वह आनंदमयी अवस्था है जो प्रपंच-जनित सुख-दुखों के लाँघने पर मिलती है। कहा जाता है, **संतुष्टता की एक झलक पर न्यौछावर कुबेर का कोष।**

संतुष्टता प्यारे प्रभु का रमणीक कृपा-प्रसाद है, जो भाग्यवानों को ही नसीब होता है। यही कारण है कि महामुनि वशिष्ठ ने भी संतोष को 'मोक्ष का द्वारपाल' कहा है। संतुष्टता को पारस कहना उचित होगा क्योंकि मनुष्य जीवन को सुवर्ण में बदलने का सामर्थ्य इसी में है।

एक बूटपॉलिश वाले से हमने पूछा, कैसे हो भाई? उसने मुस्कराते हुए जवाब दिया, साहब, भगवान की दया से पेट का गुज़ारा तो हो ही जाता है। नीली छतरी वाले की मेहरबानी हो तो थोड़ा इससे ज़्यादा भी मिल जाता है। मैं मन ही मन सोचने लगा, न घर, न ठिकाना और न कोई बैंक-बैलेन्स। ऐसा होते हुए भी वह कितना खुश है। याद आते हैं वे दिलकश शब्द – '**थोड़ा है थोड़े की जरूरत है, फिर भी ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत है।**' और बहुत लोग ऐसे भी हैं कि बहुत कुछ होने के बाद भी खुश नहीं रहते। इसे दुर्भाग्य नहीं तो और क्या कहा जाये? समाधान के बिना जीवन का रंग तो फीका ही लगेगा। संतुष्टता तो मन में ही होती है, चिन्तन द्वारा उसे अनुभव करना है। आध्यात्मिक दृष्टि से संतुष्टता ही परमपद है। स्थिर मन वाला, विकारजीत व्यक्ति मानो शीतलता की चाँदनी बिखेरने वाला चंद्रमा है। आइये, दाता की अनुपम देन संतुष्टता को हृदयंगम करें –

बड़ा खुशनसीब है
जिसे तू नसीब है।
उसे और चाहिए क्या
जिसके तू करीब है।।

दिव्य गुणों की खान – दादी प्रकाशमणि जी

• ब्रह्माकुमार शिव कुमार, बी.के.कॉलोनी (शान्तिवन)

हमने देखी दादी जी की ढेर विशेषतायें, जिनमें से कुछ का वर्णन यहाँ कर रहे हैं –

1. दृष्टि में रूहानी भाव – दादी जी का जीवन एक गुलदस्ते के मुआफ़िक था। उनके हर अंग से गुणों की खुशबू आती थी। उनके नेत्रों में हर पल रूहानी भाव होता था। उनकी एक दृष्टि मात्र से शीतलता का अनुभव होता था। जब कभी दादी जी शान्तिवन में डायमण्ड हॉल का चक्कर लगाती, उस समय उनके रूहानी प्रेम का अनुभव मैंने किया। उनका दृष्टि देना, हाथ हिलाकर आशीर्वाद का दैवी स्वरूप मैंने देखा। वे इतनी बड़ी संस्था की मुख्य प्रशासिका थी पर छोटे से छोटे बच्चे को भी बेहद प्यार दिया। हाथ में गुलदस्ता देकर सम्मानित किया। हरेक का हालचाल पूछा। वे कहतीं, बाबा का एक-एक बच्चा विशेष है, बाबा का यह यज्ञ है, कभी किसी को कोई तकलीफ न हो। यज्ञ की व्यवस्था अनुसार सबको सेलवेशन मिलनी चाहिये। हज़ारों की सभा के बीच वे पूछ लेती कि किसको कोई सुविधा चाहिये तो बोलो, दादी को निस्संकोच होकर बताओ। सब भाई-बहनें उनकी यह रूहानी स्नेह की भावना देख गद्‌गद् हो जाते थे। वे कहतीं, यह बेहद बाप का सो आप

बच्चों का घर है, आप यहाँ मेहमान नहीं हो, अपना घर समझकर आराम से रहना।

2. वाणी में नम्रता – दादी जी को जब कोई प्रशंसा के भाव से कहता कि दादी जी, यह भाई या यह बहन बहुत अच्छी है या अच्छा है तो वे स्नेह से कहतीं कि कौन अच्छा नहीं है, सब तो अच्छे हैं, बाबा के हर बच्चे में विशेषतायें भरी हुई हैं। उनकी वाणी में इतनी मधुरता थी जो उनके मुख से बोल सुनने की उत्सुकता बनी रहती थी कि कब वे अपनी टचिंग के प्रेरणादायी बोल बोलें। कभी वे भवन निर्माण की नींव लगाती और तुरंत ही स्नेह से कह देती कि भाई, भवन एक वर्ष में तैयार करके दो, बाबा के बहुत बच्चे आने वाले हैं, सबको सेलवेशन मिलनी चाहिए और सचमुच उनके बोल सिद्ध हो जाते। उनके बोल बहुत ही शीतल, सुखद और मधुर मनभावन होते थे जैसे कि मुख से फूलों की वर्षा हो रही है।

3. इकॉनामी की अवतार – दादी जी सदा याद दिलाते कि कोई भी कार्य कम खर्च बालानशीन हो। यज्ञ का एक-एक पैसा मोहर के समान है। यज्ञ में, गरीबों की पाई-पाई सफल होनी चाहिये। हर वर्ष भवनों को सफेदी के लिए कहती कि सब भवनों को सफेद कपड़ा मिलना चाहिये। ऊँचा पेंट करने की बात उन्होंने कभी नहीं कही।

यज्ञ के समर्पित भाई-बहनों के कपड़ों के लिए वे कान्फ्रेंस के बीच सुनाती कि इन भाई-बहनों को पहनाया गया कपड़ा भले ही बहुत स्वच्छ सुन्दर लगता है पर यह बहुत सस्ती रेट से मंगाया हुआ, खादी का कपड़ा है। इन वस्त्रों की इतनी चमक देखकर आने वाले लोग हैरान हो जाते कि यहाँ के भाई-बहनों का ड्रेस एक-सा कितना सुंदर है। भले सिम्पल है पर पवित्रता, स्वच्छता, त्याग भाव की चमक दिखाई देती है। किसी भी कार्य में न साधारणता, न ऊँचा भभका हो बल्कि मध्यम हो, यह ध्यान वे ज़रूर रखती थीं।

4. स्वच्छता की देवी – मधुबन

(शांतिवन) की स्वच्छता के लिए वे रोज क्लास के बाद चक्कर लगाती और चारों तरफ देखती। कहीं पर भी कूड़ा, कचरा, गंदगी देखती तो तुरंत निमित्त भाई को कह देती कि कल से ये सब दिखाई नहीं देना चाहिये। आज भी यहाँ की सुंदरता, स्वच्छता को देख लोग दंग रह जाते हैं क्योंकि यह तो है ही चैतन्य शिवालय जो स्वयं भगवान ने ब्रह्मामुख से स्थापन किया है तो ऐसे चैतन्य मंदिर की स्वच्छता के निमित्त थी दादी जी की आंतरिक रूहानी स्वच्छता।

उनको क्लास में भी कभी काले वस्त्र, मैले वस्त्र पसंद नहीं आते थे। वे कहतीं कि बाबा की दी हुई, मर्यादायुक्त सफेद ड्रेस ही क्लास में पहन कर सब भाई-बहनें आयें, भले सर्दी है तो यज्ञ से मिली सफेद शॉल ओढ़कर बैठें। वे कहती, क्लास में श्वेत हंस ही नज़र आने चाहिएँ। यह क्लास फरिश्तों का क्लास नज़र आये जो कोई नया व्यक्ति आकर देखे तो लगे कि यह तो दुनिया से न्यारी सभा है, हमारे कर्मों व अनुशासन के द्वारा आने वालों की सेवा हो जाये। वे कहतीं कि यदि किसी का कपड़ा रंगीन या काला है तो व्यक्ति दस दिन भी मैला वस्त्र पहनता रहेगा इसलिए ही तो बाबा ने हमें सफेद ड्रेस की यूनिफार्म दी है ताकि स्वच्छता बनी रहे। कितनी महान थी उनकी यह सोच! वे स्वयं भी जब कॉटेज से बाहर निकलती, लगता था कि कोई विश्व महाराजन आ रहे हैं। सबसे अधिक स्वच्छता तो उनके मन, वचन, कर्म की स्वच्छता थी। वाह! धन्य हुए हम जो ऐसी महान हस्ती को देखने का 25 वर्षों तक सुअवसर मिला। भाग्यशाली हैं ये नयन!

5. निमित्त, निर्माण और निरहंकारिता की देवी – जब कभी भी बड़ी सभा में कोई पद वाला पर कम उम्र का व्यक्ति भी होता तो वे बड़े सम्मान से बाबू जी कहकर हाथ जोड़कर अभिवादन करती थीं। फिर उनकी विशेषतायें भी बता देती, उनको भविष्य के लिए कोई प्रेरणा भी दे देती तथा यज्ञ सेवा से जोड़ देती थी। बड़े-बड़े साधु-संतों, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति से प्यार से हाथ जोड़कर, मधुर टोली खिलाकर मिलती थी। उनके टोली खिलाने में भी दया-भाव, करुणा-भाव, रूहानी नशा स्पष्ट दिखाई देता था।

बच्चों के साथ बच्चा बनकर, उनके हाथ में हाथ देकर डांस भी कर लेती तो बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखकर, उनके उमंग-उत्साह को भी बढ़ा देती थी। फिर बच्चों को इनामस्वरूप एवार्ड देती, गुलदस्ता देती, हाथ मिलाती, उनको गोद में लेती, चुम्बन करती जिससे बच्चा-बच्चा कहता कि देखा दादी हमसे कितना प्यार करती हैं।

दादी जी के प्यार को जिन्होंने भी पाया, जीवन भर भूल नहीं सकता। दादी जी के साथ बच्चे भी बड़े प्यार से फोटो खिंचवा लेते थे। वे निरहंकारी भाव से हरेक के साथ खड़ी हो जाती थीं। उनमें अभिमान का नामोनिशान नहीं था कि मैं 130 देशों में फैली संस्था की हेड हूँ। वे तो कभी-कभी प्यार से कह देती कि अपने को इंचार्ज समझना, बड़ा समझना, हेड समझना माना हेडेक (सिरदर्द) मोल लेना। वे कहतीं कि हम तो सदा अपने को निमित्त समझकर चलती हूँ, इसलिए ही सदा हलकी रहती हूँ।

उनकी खूबियों का वर्णन करते रहें तो लेखनी चलती ही रहे। उनकी तो हर बात ही निराली थी। ऐसी मीठी दादी माँ की दूसरी पुण्यतिथि पर हमारा बारम्बार नमन!!! ❖

उत्पादन और लाभ.. पृष्ठ 14 का शेष

अभी मैं व्यक्तिगत पुरुषार्थ के लिए ईश्वरीय साहित्य का अध्ययन करता हूँ, खासकर मम्मा-बाबा की जीवन कहानियों का। मैं इस संगमयुग में दैवी परिवार की हरेक आत्मा से मिलना चाहता हूँ इसलिए देश-विदेश के सेवाकेन्द्रों का भ्रमण करता रहता हूँ। मेरे जीवन का यह लक्ष्य है कि ब्राह्मण जीवन में कभी सूखापन न रहे, सदा उमंग-उत्साह बना रहे इसलिए मैं कुछ नया करने का, नया सीखने का प्रयास करता रहता हूँ। ❖

बरबादी से आबादी की ओर

• ब्रह्माकुमार गुरपाल सिंह, जिला जेल रोहिणी, दिल्ली

मेरा जीवन बसंत के समान हरा-भरा था लेकिन बसंत के बाद आने वाली पतझड़ का मुझे ज़रा-भी अहसास न था। मेरी सारी भविष्य योजना उस समय धूल-धूसरित हो गई जब मैं गलत दोस्तों के संग में आ गया। कुसंग का रंग मुझ पर चढ़ने लगा और व्यसनों की आदत इतनी बढ़ गई कि मैं चाह कर भी इन्हें छोड़ने में असमर्थ था। पिताजी ने व्यसनों से बचाने के लिए मुझे शादी की डोर में बाँध दिया।

शराब बनी मेरी जीवन संगिनी

शादी से पहले मैं थोड़ी पीता था। बाद में आदत इतनी विकराल बन गई कि उससे बाहर निकलने का रास्ता ही मुझे नज़र नहीं आता था। दिन में मैं पानी कम और शराब ही ज़्यादा पीता था। बच्चों के हो जाने के बाद भी मैं व्यसनों से उबर नहीं सका। मेरा जीवन चरित्रहीनता की मोटी किताब बनता चला गया। मुझे तंबाकू, जुआ, गांजा, सिगरेट आदि की भी लत लग गई। मैं जो कमाता था उससे तीन गुना तो व्यसनों पर खर्च कर देता था। मेरी वजह से मेरी पत्नी, बच्चों का जीवन नरक बन कर रह गया। शराब के नशे में बीवी से झगड़ा करना, गालियाँ देना मेरा स्वभाव बन गया। कुसंग का रंग इतना बढ़ा कि मेरे जैसे दादागिरी करने वालों का एक बदनाम संगठन बन गया। रात को आवारा घूमना, घर न जाना, शराब के नशे में गटर में गिरना, सड़कों पर लेटना आदि सब होता था। परिवार वाले मुझे बहुत समझाते थे पर मेरे सर पर जूँ नहीं रेंगी, मैं जीवन का सुख व्यसनों में डूबकर तलाशता था। मेरी फ़िकर में ही एक दिन पिताजी को लकवा हो गया, तब भी मैंने स्वयं को नहीं बदला। मेरी पत्नी ने पिताजी की सब प्रकार से सेवा की, मैंने कभी नहीं की। मेरी सात साल की बिटिया को अस्थमा हो गया पर मेरी सांसें थीं कि नशे के बिना नहीं चलती थीं। मुझ पर कर्ज़ा भी बहुत चढ़ गया। सारा मोहल्ला मुझसे परेशान रहने लगा था और कोई सज्जन व्यक्ति मुझे पसन्द नहीं करता था। मेरा जीवन पूरी तरह बंजर बन गया था।

और एक दिन, रही-सही कसर भी पूरी हो गई। मैं अपने कुसंगी मित्रों के साथ एक झूठे मुक़द्दमे में फंस गया। जेल हो गई। जेल में ही पिताजी के देह-त्याग की ख़बर आई। मैं दाह-संस्कार के लिये कुछ घंटे के लिए घर गया। मुझे हथकड़ी और बेड़ी बाँध कर लाया गया तो मैं किसी से भी नज़र नहीं मिला पाया। मेरे मन में विचार आया कि आसुरियत की इतनी गर्त में धंसने के बाद निकलना कैसे संभव हो सकता है? अन्य भी कई लोगों को कहते सुना कि किसी भी कीमत पर इसका परिवर्तन होना संभव नहीं है। मैं बहुत निराश था। निराशा को भूलने के लिये जेल में पहले से ज़्यादा व्यसनों का सहारा लेने लगा और जेल से छूटने के बाद सुपारी लेकर लोगों को मारना, लूटपाट करना, ये योजनायें बनाने लगा। मैं अपने आप को बहुत ही गिरा हुआ अनुभव करने लगा।

उन्हीं दिनों मेरी मुलाकात जेल में ही एक मुकेश नाम के बन्दी भाई से हुई जो जेल में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा दी जाने वाली राजयोग की क्लास करने जाता था। वहाँ जाने से उसके जीवन और व्यवहार में काफी परिवर्तन आया। वह पहले से ज़्यादा खुश रहने लगा। दोस्ती के नाते कभी-कभी मुझे प्यार से आश्रम में चलने को भी कहने लगा लेकिन मैं यह ज़रूरी नहीं समझता था क्योंकि मेरे व्यसनों के साथी मुझे छोड़ते नहीं थे और मैं अपनी ही ज़िन्दगी में मस्त था। लेकिन मुकेश की शुभभावना कम नहीं होती थी, न ही वह थकता था। उसकी निरंतर कल्याण-कामना मेरे अन्तर्मन को खींचती ज़रूर थी। वह कहता था कि

एक बार, सिर्फ एक बार आश्रम में चल कर ब्रह्माकुमारी बहन से और ब्रह्माकुमार भाई जी से मिल लो। उसके शब्दों में इतना प्यार और रहम था कि मन सिहर जाता था और मैं सोचता था कि एक बार वहाँ जाकर देखने वा मिलने में क्या हर्ज़ है, मिल ही लेता हूँ।

जीवन में नवीन सूर्य का उदय

आखिर वह दिन आया जब मेरे वीरान और अंधियारे जीवन में नई बहारें आईं। मैं पहली बार जेल में दी जाने वाली राजयोग की क्लास (आश्रम) में गया और संचालिका बहन जी से मिला। **उनका रूहानियत से भरपूर चेहरा, उनकी रूहानी मीठी वाणी जैसे मन को भा गई। उन्होंने मुझे राजयोग और सृष्टि चक्र के बारे में बताया। उस वक्त मैं स्वयं को धन्य-धन्य अनुभव करता जा रहा था। ऐसे लग रहा था मानो आसमान से फ़रिश्ता उतर कर मुझे सुना रहा हो और मुझे जीवन श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा दे रहा हो। मन ही मन मैंने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की पक्की ठान ली। जीवन में नया सूर्य उदित हुआ, उसकी किरणों से व्यसनों रूपी किटाणुओं का नाश हुआ।**

प्रभु ने गटर से उठा कर गले का हार बना लिया

अपने प्यारे बाबा को मैंने शराब, सिगरेट, गुटखा, तंबाकू, गांजा आदि सब व्यसन दान में दे दिये और जीवन में फिर कभी भी हाथ न लगाने की कसम खा ली। वर्तमान समय मैं जिला कारागार रोहिणी में रहते हुए ईश्वरीय ज्ञान का अध्ययन कर रहा हूँ। मेरे अज्ञानकाल में जो लोग मुझसे बात करना भी पसंद नहीं करते थे, अब वे मुझसे आकर मिलते हैं और ज्ञान सुनते हैं। बाबा के सत्य ज्ञान से अनेकों ने अपना जीवन परिवर्तन किया है। जेल में दिनोंदिन बाबा के ज्ञान प्रकाश से आश्चर्यजनक परिवर्तन होता जा रहा है जैसे कि यहाँ के बंदियों ने विकारों की गंदगी के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन छेड़ दिया हो। बाबा की कृपा से यहाँ ज्ञान धमाका होगा और विकारों की जेल में फँसा हर मानव आज़ाद हो जायेगा। अज्ञानता की सलाखें टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगी। जेल सुपरिटेंडेंट ने, इस तरह परिवर्तन होता देख मुझे बुलवाया और पूछा कि **ऐसा क्या जादू करता है तुम्हारा बाबा? जो काम पुलिस, सरकार और अदालतें नहीं कर पाई वो शिव बाबा के नाम से हो रहा है। उन्हें भी बाबा का ज्ञान बताया गया और ब्रह्माकुमार भाई से मिलवाया गया। अब इस कार्य में सुपरिटेंडेंट साहब भी हमें भरपूर सहयोग दे रहे हैं। अभी बहन जी और भाई साहब से सब कहते हैं कि आपने तो कीचड़ में कमल खिला दिया है लेकिन वे भी यही कहते हैं कि यह तो शिव बाबा के असीम प्यार की निशानी है।**

आज जब कभी पुराने लौकिक दिन याद आते हैं तो आँखों में आँसू आते हैं कि कहाँ मैं व्यसनों से भरा, आवारा और गुण्डागर्दी करने वाला और कहाँ आज प्यारे बाबा ने उपकार करके मुझे कितना बदल दिया है, अपना बना लिया है। इन हाथों ने ना जाने कितनों को कष्ट पहुँचाया, कितनों को दु:खी किया, इस मुख ने कितनों को गालियाँ दीं, मेरे इन सभी गुनाहों को, अवगुणों को न देखकर क्षमा के सागर बाबा ने फिर भी मुझे अपना लिया, कितना उपकार है! परमपिता ने गटर में, नालियों में गिरने वाले को सिर का ताज बना दिया है। निमित्त बहन जी और भाई जी ने भी मुझे भगवान के घर आने की इजाज़त दी, स्नेह दिया, दुलार दिया। भगवान का और उनका दिल से उपकार गाता हूँ जो नित्य हमारे लिये समय निकाल कर मुरली सुनाने यहाँ जेल में आते हैं। **अब तो जेल भी जैसे जीवनमुक्ति धाम लगने लगी है, सब कुछ सुन्दर लगने लगा है। सबसे सुन्दर हैं मेरे प्यारे बाबा जो गुणों के सागर हैं। किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें बाबा!**

सच्चा आनन्द व्यसनों के भोग में नहीं, त्याग में है

विश्व के सभी भाई-बहनों को मैं

नम्रता के साथ कहना चाहता हूँ कि सब नशे हैं बेकार सिवाय नारायणी नशे के। ऐसे कितने घर हैं जो व्यसनों के कारण बरबाद हैं जहाँ बच्चों की पढ़ाई के लिए तो पैसा नहीं होता परन्तु व्यसनों पर हज़ारों खर्च होते हैं। जहाँ बच्चे तो भूखे रहते हैं परन्तु बाप नशे में धन उड़ाता है। ये व्यसन शरीर और बुद्धि पर ज़हरीला असर डालते हैं। उस समय तो मनुष्य स्वयं को अत्यंत बलशाली अनुभव करता है परन्तु बाद में चलकर ये ही विभिन्न रोगों के जन्मदाता सिद्ध होते हैं। इनके सेवन से बुरी भावनायें पनपती हैं, चरित्रहीनता की वारदातें बढ़ती हैं और अच्छे-अच्छे मनुष्य भी पथभ्रष्ट हो जाते हैं और फिर समाज के सुधारक इन पथभ्रष्ट लोगों को एक गंदगी की तरह जेल रूपी कूड़ाघरों में फेंक देते हैं। इसलिए शिक्षित वर्ग को पहले स्वयं को इन व्यसनों से मुक्त रखना चाहिए। भोजन उपरांत शराब रूपी ज़हर को लेना, पार्टियों में इस गन्दे भोजन को शिष्टता मानना मूर्खता है। जो व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में महान कार्य करना चाहते हैं उन्हें व्यसनों का गुलाम नहीं होना चाहिये।

व्यसन बड़ी बुरी चीज़ हैं। विचारों को, संस्कारों को दूषित करने वाले ये ज़हर मन को ज़हरीला कर देते हैं। देह रूपी मंदिर से धुआँ निकालते हुए और अग्नि निगलते हुए मूर्ख मनुष्य गर्व का अनुभव करता है। वह यह भूल जाता है कि तुम सिगरेट नहीं पी रहे हो बल्कि सिगरेट तुम्हें पी रही है। व्यसनों के बढ़ते प्रचलन के कारण मानव समाज विनाश की ओर अग्रसर है। व्यसनों में चूर दुर्बुद्धि मनुष्य जाने कब विनाश का बटन दबा बैठे। ये सभी व्यसन विनाशकारी हैं। इस फैशन से खुद को बचाओ। ये व्यसन पुरुषों में अधिक व नारियों में कम पाये जाते हैं। पर नारियों को भी परिवार में श्रेष्ठ संस्कारों का बीज बोने के लिए विषयों का कीड़ा बनने से बचना चाहिये।

व्यसनों की गुलामी क्यों स्वीकार करता है शक्तिशाली मनुष्य? शक्तियों का दावा करने वाला, दूसरों पर शासन करने वाला कुव्यसनों के अधीन क्यों? विचार कर अपनी शक्ति को पहचानो। तुम एक ही संकल्प में इन बीमारियों से मुक्त हो सकते हो। यदि कहते हो कि आदत पड़ गई, अब छूट नहीं सकती तो कोई अच्छी आदत डाल लो, फिर देखो, एक ही झटके से मुक्ति पा सकते हो। वक्त की गर्दिश और कुसंग के बहकावे में आकर मैंने जीवन को बर्बाद किया परन्तु करुणामय प्रभु की कमाल है जो हाथों में आज शराब की जगह ज्ञान अमृत का प्याला है। राजयोग से ही असंभव, संभव होता है। अब तो यही लक्ष्य है कि वर्तमान समय की रफ़्तार को जान कर प्यारे बाबा की आशाओं को पूर्ण करने के लिए फ़रिश्ता बन, अनेकों को फ़रिश्ता बनने की युक्ति बताऊँ और अपने ब्राह्मण कुल को रोशन करूँ। अब वह दिन दूर नहीं जब हर तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ होंगी, सतयुग आया कि आया। अब गफलत का समय नहीं, उड़ने का समय है, उड़ाने का समय है। उड़ते रहो, उड़ाते रहो।

सुख सागर ने मुझे मुक्ति और जीवनमुक्ति का पथ दिखा दिया है। उस पर पथिक बन मैं चल रहा हूँ और चलता ही रहूँगा। इसी राह पर सभी रूहों को राहत मिलेगी। अभी मेरा दु:खी, अशांत परिवार बहुत ज़्यादा खुश है। मैं बहुत-बहुत खुश हूँ। अन्य सभी भी जब जेल में मुझसे मिलने आते हैं तो बहुत खुश होते हैं और मैं इस जेल से छूट जाऊँ, यही दुआयें करते हैं। शुक्रिया बाबा! भगवान से मिला हुआ यह नया जन्म उसकी अमानत है। कभी-कभार व्यसनी जीवन के पुराने साथी, व्यसनों से संबंधित चीज़ें मेरे ही सामने फेंक देते हैं अर्थात् मेरा इतना आदर करते हैं। ओहो बाबा! आपने मुझे क्या से क्या बना दिया! जब बाबा ने मुझे व्यसनों और विकारों की जेल से मुक्त करवाया तो फिर यह जेल क्या है! ❖

स्वदर्शन चक्र चलाया करो

• ब्रह्माकुमारी रेशमा, रुद्रपुर

सुराल में सुनने को मिला, बहुत बोलती हो, ज़बान कम चलाया करो। मैं चुप-चुप रहने लगी। चुप हो गई तो सुनने को मिला, दिमाग ज़रा कम चलाया करो, बात इतनी बढ़ा ली कि चुप्पी ही साध ली? मैंने कहा, जी अच्छा। मैं निश्छल भाव से सेवा में लगी रहने लगी। बहुत सेवा करने लगी तो सुनने को मिला, हाथ-पैर ज़रा कम चलाया करो। ना खुद आराम करती हो, ना करने देती हो। मैंने सोचा, मिलजुल कर चलने में भलाई है, मैं थोड़ा-थोड़ा सहयोग सभी से लेने लगी। सहयोग लेने लगी तो सुनने को मिला, जो करना है, अपने आप कर लिया करो, हुक्म कम चलाया करो। मैं इतनी परेशान हुई कि दिल ही दिल में हे भगवान, हे भगवान पुकारने लगी। भाग्य से पतिदेव तो कुछ नहीं कहते थे, मैं भी उनसे कोई शिकायत नहीं करती थी।

एक दिन शिवजी पर जल चढ़ा रही थी कि मेरी आँखों से शिवलिंग पर आँसू जा गिरे। ये आँसू पितृ-स्नेह के थे। दिवंगत पिता की भी याद आ गई। याद ऐसी थी कि दिल तड़प उठा। तभी एक संगीत कानों में पड़ा, जो घर से कुछ दूरी पर दूसरे घर में चल रहा था। गीत के शब्द थे – 'आपने बाबा हमें कितनी हसीं तकदीर दी ..।' मैं इतनी आकर्षित हुई कि बिना चप्पल के पैरों से उस घर में प्रवेश कर गई।

मुझे देख घर के सभी सदस्य खुश हो उठे। उन्हें भी दिल की खुशियों का अनुभव सुनने के लिए कोई चाहिए था सो मैं घर बैठे मिल गई। वे बिना सांस लिये अपनी हसीं तकदीर की गाथा सुनाते चले गये और मैं भी बिना पलक झपके सुनती चली गई। वे आबू स्थित ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में ईश्वरीय मिलन मनाकर अभी-अभी लौटे थे। उनकी खुशी छिपाये नहीं छिप रही थी। उनका छोटा-सा परिवार बाबा-बाबा करते थक नहीं रहा था। मैंने पूछा, कौन बाबा तो उन्होंने झटपट मुझे ज्ञान-कोर्स करा डाला और फिर ईश्वरीय प्रसाद भी खिलाया। उनका तीन वर्ष का बच्चा भी ज्ञान की बातें सुना रहा था। बच्चे की माँ, दुलहन जैसी उम्र की होते भी साक्षात् सरस्वती लग रही थी। उसकी सफेद-सी साड़ी, हलकी-सी बिन्दी, नेत्रों से छलकता रूहानी प्यार देख मैं जड़वत् हो गई। घंटे भर बाद मुझे याद आया, मुझे अपने घर भी जाना है लेकिन अपने घर में लोगों की बातों से तो मैं बहुत परेशान थी, फिर भी जाना तो पड़ा ही। जाने लगी तो उन्होंने एक फोटो दे दिया और दे दी रूहानी गीतों की एक कैसेट। फोटो थी प्यारे ब्रह्मा बाबा की, जब भी फोटो को देखूँ, पलकें झपकती हुई नज़र आएँ, मेरे लिए तो यह रहस्य ही था, इसी रहस्य पर चिन्तन करते-करते सो गई। समय था रात 2 बजकर 30 मिनट, फोटो से आवाज़ आई, उठो बच्ची, मैं उठकर मन ही मन बातें करने लगी। तभी फिर एक मधुर आवाज़ मेरे कानों में आई, **बच्ची, खूब स्वदर्शन चक्र चलाया करो।'** विचार करने लगी, यह कौन-सा चक्र है? अब तक तो सुनती आ रही थी, ज़बान कम चलाया करो, दिमाग कम चलाया करो, हाथ-पैर कम चलाया करो, हुक्म कम चलाया करो पर अब मधुर वाणी कानों में पड़ी, बच्ची, स्वदर्शन चक्र चलाया करो।

जो मधुबन होकर आये थे, उनसे ही पूछा कि यह कौन-सा चक्र है? उन्होंने मुझे सेवाकेन्द्र का पता बताया। मैं पतिदेव को साथ ले उसी दिन ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पहुँची। बस, फिर तो सारे चक्करों से छुड़ाने वाला स्वदर्शन चक्र मिल गया और मेरा मन कह उठा –

'खान मिल गई इतनी गहरी,
सुन्दर मिला दलाल।
पलक झपकते बादशाह बन गये,
हो गये मालामाल।
दुनिया करले जितने दावे,
सब है मायाजाल।
सच्चा ज्ञान यहाँ पर मिलता,
ज्ञान की है बस कमाल।
कौड़ी जैसे आये थे,
बन गये बेमिसाल।
बाबा तेरा कमाल।'

एक भगवान से सुनने लगी तो अन्य सभी का कहना बंद हो गया। ❖

श्री कृष्ण जन्मोत्सव

हर वर्ष भारत में जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। हर एक माता अपने बच्चे को नयनों का तारा और दिल का दुलारा समझती है परन्तु फिर भी वह श्री कृष्ण जी के बचपन के रूप को देखने की चेष्टा करती है। भक्त लोग श्री कृष्ण को 'सुन्दर', 'मनमोहन', 'चित्तचोर' इत्यादि नामों से पुकारते हैं। वास्तव में श्री कृष्ण का सौन्दर्य चित्त को चुरा ही लेता है। जन्माष्टमी के दिन जिस बच्चे को मोर-मुकुट पहना कर मुरली हाथ में देते हैं, लोगों का मन उस समय उस बच्चे के नाम, रूप, देश व काल को भूल कर कुछ क्षणों के लिए श्री कृष्ण की ओर आकर्षित हो जाता है। सुन्दरता तो आज भी बहुत लोगों में पाई जाती है परन्तु श्री कृष्ण सर्वांग सुन्दर थे, सर्वगुणसंपन्न, सोलह कला संपूर्ण थे। ऐसे अनुपम सौन्दर्य तथा गुणों के कारण ही श्री कृष्ण की मूर्ति भी चित्तचोर बन जाती है।

इस कलियुगी सृष्टि में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसकी वृत्ति, दृष्टि कलुषित न बनी हो, जिसके मन पर क्रोध का भूत सवार न हुआ हो अथवा जिसके चित्त पर मोह, अहंकार का धब्बा न लगा हो। परन्तु श्री कृष्ण जी ही ऐसे थे जिनकी दृष्टि, वृत्ति कलुषित नहीं हुई, जिनके मन पर कभी क्रोध का प्रहार न हुआ, कभी लोभ का दाग नहीं लगा, वे नष्टोमोहा, निरहंकारी तथा मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उनको संपूर्ण निर्विकारी कहने से ही सिद्ध है कि उनमें किसी प्रकार का रिंचक मात्र भी विकार न था। जिस तन की मूर्ति सजा कर मंदिर में रखी जाती है, उनका मन भी तो मंदिर के समान ही था। श्री कृष्ण केवल तन से ही देवता न थे, उनके मन में भी देवत्व था।

क्या हम श्री कृष्ण के दर्शन कर सकते हैं?

इस संसार में यदि कोई व्यक्ति बहुत सुन्दर होता है तो लोग कहते हैं कि ब्रह्मा अथवा विश्वकर्मा ने इस पर अपनी सारी कारीगरी लगा दी है। कोई कहता है कि इसे तो भगवान ने अपने हाथों से स्वयं रचा है तथा कई ऐसा भी कहते हैं कि इसका सौन्दर्य तो न्यारा ही है तो ऐसे ही न्यारे सतोगुणी तत्वों से, प्रकृति ने श्री कृष्ण जी की छवि को रचा था। जन्म से ही उन्हें पवित्रता तथा रत्न-जड़ित ताज प्राप्त थे। ऐसे सतोप्रधान पुरुष को निहारने के लिए उन जैसा ही श्रेष्ठ जीवन बनाने की आवश्यकता है।

वर्तमान समय कलियुग के अंत में ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाले योगीजन, संपूर्ण पवित्रता को प्राप्त करने के पश्चात् अर्थात् तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के पश्चात् ही सतयुग के आदि में श्री कृष्ण के सच्चे जन्मदिन को अपने नेत्रों द्वारा देख भी सकते हैं और स्वर्ग अर्थात् सतयुग में गोप-गोपियाँ बन श्री कृष्ण के साथ मंगल-मिलन भी मना सकते हैं। ❖

परमात्म-राखी

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

मीठी राखी, प्यारी राखी मनभाई, खुशियाँ लेकर आई
नर-नारी, बाल-वृद्ध, युवा सभी आ जाओ
मन-बुद्धि से शुद्ध संकल्प का हाथ बढ़ाओ
एक भैया तो क्या, अखिल जन
राखी बाँधो और बँधाओ
वर्तमान परिवेश में, देव भूमि के देश में
'कारणों' के घेर में निवारण बन दिखलाओ
'प्रॉब्लम्स' के ढेर पे 'नो प्रॉब्लम' बन जाओ
'अप्रसन्नतामुक्त' की राखी ये शान्ति किरणें ले आई
अरे छोड़ के बंधन झूठे, बढ़ाओ उमंगों की कलाई
प्यारी राखी मनभाई, खुशियाँ लेकर आई
पानी है गर सच्ची सुरक्षा तो प्रकाश बन जाओ
परमात्म राखी, सर्वोत्तम राखी बाँधो और बँधवाओ
न त्रासदी, न आतंक, न उच्छृंखलता न बंद
न तनाव, न मनमुटाव, हर्षोल्लास और आनन्द
धन-माल-जान प्राणों में प्राण
मर्यादा के कंगन बँधवाओ
भाई-बहिन से भी ऊपर पंछी
आत्मा भाई बन उड़ आओ
सच्ची राखी-दिव्य राखी बाँधो और बँधवाओ
नर-नारी, बाल-वृद्ध, युवा आओ सभी चले आओ
परमात्म राखी, सर्वोत्तम राखी बाँधो और बँधवाओ

इलाज से परहेज़ भला

• ब्रह्माकुमार विनायक, आबू पर्वत

इलाज से परहेज भला *(Prevention is better than cure)* – यह वैद्यकीय क्षेत्र की एक प्रसिद्ध और प्रयोजनकारी कहावत है। इस कहावत का अर्थ है, बीमारी के वश होकर तन, मन, धन और समय को व्यर्थ गँवाने के बजाय, शरीर में आने से पहले ही बीमारी को रोक लेना।

जब हम मरीज़ों से मिलने अस्पताल जाते हैं तो कई मरीज़ों के मुख से सुनते हैं कि डाक्टरों ने हमें अमुक चीज़ें न सेवन करने की सावधानी दी थी लेकिन जीभ के स्वादवश हमने बात सुनी-अनसुनी कर दी और आज सज़ा भोग रहे हैं। जो खाने-पीने का परहेज़ नहीं निभाता उसे अस्पताल में सज़ा भोगनी पड़ती है और जो कर्म में परहेज़ नहीं निभाता उसे कारागृह में सज़ा भोगनी पड़ती है। सलाखों के पीछे सज़ा भोगते हुए कैदी के मन से भी हर घड़ी यही निकलता है कि यह मैंने क्या किया, जिस समय मेरे हाथों से पाप कर्म होने जा रहा था उस समय अगर पल भर के लिए स्वयं को रोक लेता तो आज पापात्माओं की भीड़ में शामिल न होता!

ज़रूरी है पापों से परहेज़

आज का मनुष्य बीमारियों से बचने के लिए तेल, मसाला, मीठे का परहेज; कच्ची सब्जी, अंकुरित धान्य, फल आदि का सेवन; व्यायाम आदि बातों पर ध्यान देता है परन्तु पाप कर्मों से स्वयं को बचाने के लिए कोई युक्ति नहीं अपनाता है। जब पापों से परहेज़ करने के लिए कहा जाता है तो उसका तर्क होता है कि हम चिन्तनशील हैं; अच्छा सोचना, अच्छा करना, किसी को दुख नहीं देना, परोपकारी बनकर रहना, ये बातें तो हमें पता ही हैं फिर इससे अधिक पुरुषार्थ करने की क्या ज़रूरत है?

धरती पापकुण्ड क्यों बनी?

लेकिन विचारणीय प्रश्न है कि चिन्तनशील मानव की दुनिया की हालत इतनी बिगड़ी हुई क्यों है? जहाँ भी देखो, आतंकवाद, हत्याकांड, अनैतिकता, अत्याचार अर्थात् पाँचों विकारों का तांडव नृत्य क्यों है? मानव अपने कर्मों से जानवरों से भी नीच स्थिति तक क्यों उतर गया है, उसने इस धरती को पापकुंड क्यों बना दिया है?

इसका उत्तर यह है कि मानव आत्मा में द्वापर युग से अनेक बुराइयों के बीज छिपे हैं। उन बुराइयों के संस्कारों के कारण विचार भी फिर वैसे हो जाते हैं। अत: इन बुरे संस्कारों के रहते हुए अपने मन, बुद्धि और कर्मेन्द्रियों को वश में रखने के लिए और पापों से बचने के लिए इस कहावत को प्रयोग में लाना ज़रूरी है कि **'दुष्कर्मों की सज़ा भोगने के बजाय उनका परहेज़ करें।'**

संभव है मन को शुद्ध रखना

एक प्रश्न है, क्या यह संभव है कि मन में अशुद्ध संकल्प प्रवेश ही न करें? ईश्वरीय ज्ञान कहता है कि संभव है। **डॉक्टर लोग कहते हैं, अगर दिन में हर घंटे एक गिलास पानी पीने की आदत रहे तो शरीर को अनेक बीमारियों से बचाया जा सकता है। ऐसे ही हर घंटे में एक मिनट के लिए यदि ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास किया जाये तो व्यर्थ संकल्पों से बचा जा सकता है।** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में इसका प्रायोगिक रूप जारी है। इसे कहते हैं मन के संचार पर नियंत्रण *(Mind Traffic Control)*। जैसे चौराहे पर खड़ी पुलिस को यह समझ होती है कि कब और कौन-सी दिशा में वाहनों को चलने या रोकने का आदेश देना है। अगर एक मिनट के लिए भी यह व्यवस्था डगमगा जाए तो संचार स्थगित *(Traffic Jam)* हो जाने से वातावरण में अशांति, तनाव और अनिश्चितता फैल जाती है। इसी प्रकार से व्यक्ति, स्थान और वायुमंडल के प्रतिकूल होने पर

नकारात्मक, विरोधात्मक एवं विनाशकारी संकल्पों को रोककर शुद्ध एवं रचनात्मक संकल्पों की उत्पत्ति करना, यह कला राजयोग द्वारा विकसित होती है। यह शक्ति न हो तो व्यक्ति तनाव में आकर या विकारों के वशीभूत होकर विकर्म कर लेता है।

हर घंटे में एक मिनट ईश्वरीय स्मृति

यह विधि इस प्रकार है, सुबह से लेकर रात को सोने तक हर घंटे में एक मिनट के लिए कारोबार स्थगित कर, मन के विचारों को नियंत्रित कर, स्वयं को भौतिक शरीर से अलग आत्मा समझ, आत्मा के पिता परमात्मा की दिव्य स्मृति में रहना।

जैसे चुंबक अपने गुण और शक्ति प्रदान कर सम्मुख रखे हुए लोहे को चुंबक बना देती है, वैसे ही सर्व गुणों के सागर सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा भी अपने सम्मुख उपस्थित आत्माओं को गुणों और शक्तियों से भरपूर कर देते हैं। विकारों के प्रभाव के कारण अब तक जो ज्ञान, गुण और शक्तियाँ सुषुप्त अवस्था में थे, वे जागृत अवस्था में आ जाते हैं।

हमसे जो भी गलतियाँ होती हैं, उनका मुख्य कारण है कमज़ोर बुद्धि, जिस कारण यथार्थ और अयथार्थ को परखकर उचित निर्णय नहीं लिया जाता है। कमज़ोर बुद्धि का कारण है अपवित्र संस्कार। पवित्रता के सागर भगवान की याद द्वारा अपवित्रता के संस्कार नष्ट होकर पवित्रता धारण होने से बुद्धि को बल मिलता है। इससे पाप कर्मों को रोकने की और सुकर्म करने की शक्ति प्राप्त होती है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लाखों जिज्ञासुओं का, जिन्होंने इस विधि को नित्य जीवन में अपनाया है, स्पष्ट अनुभव है कि हर घंटे में एक मिनट की परमात्मा की यथार्थ याद का अभ्यास पाप कर्मों से संपूर्ण परहेज रखने की शक्ति प्रदान करता है, स्वास्थ्य को ठीक रखता है और सच्चरित्रवान बनाता है।

इस अभ्यास से होने वाले अन्य लाभ

कहा जाता है, अभ्यास मनुष्य को कुशल बना देता है *(Practice makes a man perfect)*। हर घंटे में एक बार भगवान से मन-बुद्धि द्वारा संपर्क जोड़ने का यह अभ्यास सहजयोगी बना देता है।

प्रतिकूल परिस्थिति या वायुमण्डल में अपने संकल्पों को पूर्ण विराम दे सकते हैं या संकल्पों की गति को नियंत्रण में रख सकते हैं।

समेटने की और विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति जमा होती जाती है।

भगवान की स्मृति से तमोगुणी वायुमंडल सतोगुणी वायुमंडल में परिवर्तन होने के कारण संपर्क में आने वाली अन्य आत्माओं को भी उसका लाभ मिलता है।

कई बार कार्यव्यवहार में व्यस्त होने के कारण हम सोचते हैं कि काम पूरा होने के बाद मन को प्रभु में एकाग्र कर लेंगे लेकिन एक बहुत बड़ी राज़ की बात हम भूल जाते हैं कि जिस सेवा की सफलता के लिए हम भाग-दौड़ कर रहे हैं, उसकी सफलता की चाबी इस एक मिनट की परमात्मा की स्मृति में समाई हुई है। अत: कार्य पूरा होने के बाद नहीं बल्कि कार्य के प्रारंभ में और कार्य के बीच-बीच में भी ईश्वरीय याद में रहने से सफलता कई गुणा बढ़ जाती है। ❖

हर कर्म में बाबा की याद

शिवबाबा कहते हैं कि दफ़्तर में जब आप 'कलम' का प्रयोग करते हैं तो 'कमल' को भी साथ ही याद करो कि 'मैं कमल के समान न्यारा और अलिप्त हूँ?' जब आपके सामने फाइल आती है तो यह सोचो कि अब शिवबाबा मेरे जीवन की फाइल अथवा रिकार्ड (Record) में क्या रिमार्क (Remark) दे रहे होंगे और किस बात पर हस्ताक्षर कर रहे होंगे? जब आपको अपने कार्य-व्यापार के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ती है अथवा बुद्धि दौड़ानी पड़ती है तो सोचना चाहिए कि क्या हम ईश्वरीय याद रूपी यात्रा में भी भाग रहे हैं या नहीं? इस प्रकार हर कर्म को बाबा की याद का साधन बना सकते हैं।